गणतंत्र दिवस

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

पौष २०७२ / जनवरी २०१६

ISSN-2321-3981

सम्पूर्ण बहुरंगी

₹ १५

दृष्टि
The Vision

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

किरण कौशल
3rd Rank

अजय मिश्रा
5th Rank

लोकेश कुमार सिंह
10th Rank

प्रदीप राजपुरोहित
(IPS)
13th Rank

निशांत जैन
13th Rank

Online Test Series

For Preliminary Exam-2016

Get yourself prepared for 7th August, 2016

General Studies & CSAT

Starts from: 24th January, 2016

First test Free for all students

For More Details visit: drishtiias.com

आई.ए.एस., पी.सी.एस. तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी को समर्पित पत्रिका

दृष्टि The Vision

करेंट अफेयर्स टुडे

महत्त्वपूर्ण लेख

- सीरिया में शह और मात का खेल
- ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस में भारत की स्थिति
- नेट न्यूट्रैलिटी का महत्त्व
- सरोगेसी के विनियमन से जुड़े प्रश्न
- करेंसी वॉर : एक नवीन वैश्विक आर्थिक संघर्ष

रणनीतिक आलेख

- मुख्य परीक्षा में उत्तर कैसे लिखें?

एथिक्स एवं वाद-विवाद

- कार्ल मार्क्स के नैतिक विचार
- भारत में बढ़ती असहिष्णुता

टॉपर्स से बातचीत

- मनीष कुमार वर्मा
- डॉ. विभोर अग्रवाल

मुख्य परीक्षा विशेषांक

- सामान्य अध्ययन के चारों प्रश्नपत्रों का 12 खंडों में वैज्ञानिक वर्गीकरण एवं प्रत्येक खंड पर इस वर्ष की मुख्य परीक्षा के लिये महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
- इन प्रश्नोत्तरों के माध्यम से सिर्फ 7 दिनों में पूरे सामान्य अध्ययन का त्वरित रिविज़न

और भी बहुत कुछ....

विभिन्न राज्यों से जुड़े

हिंदी माध्यम के IAS टॉपर

क्या कहते हैं इस पत्रिका के बारे में...

राजेन्द्र पैंसिया
IAS- उ.प्र. कैडर

"हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि पत्रिका कौन सी पढ़ी जाए? इसके लिये सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, प्रामाणिक और सारगर्भित स्रोत 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' के माध्यम से मिलता है। इंटीग्रेटेड एप्रोच से तैयारी के लिये हिंदी माध्यम में ऐसी किसी पत्रिका का अभाव था जो प्रिलिम्स, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार की ज़रूरतों को पूरा कर सके। विकास सर के मार्गदर्शन में यह पत्रिका निश्चित ही इन सभी मानकों पर खरी उतरती है। हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी गूगल ट्रांसलेटेड मैटीरियल पढ़ने की बजाय यह पत्रिका पढ़ें जो पूर्णतः मौलिक व अनुभवी टीम की मेहनत का परिणाम है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका उनके लिये निश्चित रूप से वरदान साबित होगी। शुभकामनाएँ।"

Available at your nearest book shop

वितरण और विज्ञापन के लिए संपर्क करें-
(+91) 8130392355

FOR DAILY CURRENT AFFAIRS UPDATE Visit at www.drishtiias.com

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 Contact : 011-47532596, (+91) 8130392354-56-57-59

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

पौष २०७२ ▪ वर्ष ३६
जनवरी २०१६ ▪ अंक ७

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	१५ रुपये
वार्षिक	:	१५० रुपये
त्रैवार्षिक	:	४०० रुपये
पंचवार्षिक	:	६०० रुपये
आजीवन	:	११०० रुपये

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९,
२४००४३९

e-mail -devputraindore@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

पौष (जनवरी) मकर संक्रान्ति का माह है। सूर्य, की उपासना का पर्व। भारतीय संस्कृति का प्रत्यक्ष देवता है सूर्य। गायत्री मंत्र में इसी से प्रार्थना की जाती है हमारी बुद्धि को प्रकाशित करने की।

हमारे सौर मण्डल का यह सबसे निकटस्थ तारा हमारे लिए अनेक गुणों का आदर्श भी है। सूर्य का एक गुण है नियमितता। क्या आपने कभी 'रवि' को रविवार मनाते देखा है? अर्थात् बिना छुट्टी अपने काम को निश्चित समय पर आरंभ करना और समय पर ही समाप्त भी करना, सूर्य हमें सिखाता है। उदारता और समानता भी सूर्य से सीखने के विशेष गुण हैं। एक सुभाषित है-

बिना कहे ही सत्पुरुष पर की पूरे आस।
कौन कहत है सूर को घर घर करत प्रकाश।।

सूर्य से माँगना नहीं होता है कि 'आओ! हमें प्रकाश दो, उष्मा दो, ऊर्जा दो।' वह यह भी नहीं कहता कि 'ये इसे दूंगा, इसे नहीं।' किसी से उसने इनके बदले कुछ माँगा नहीं। हमें धूप का, उजाले का, गर्मी का कोई मूल्य नहीं चुकाना होता। वस्तुतः यह उसका परोपकार है निस्वार्थ परोपकार। हमारे पास जो भी अच्छाई है उसे उदारता से, स्वार्थ रहित रहकर बांटते रहना सिखाता है सूर्य। यह सब देने वह हमें अपने पास नहीं बुलाता स्वयं हमारे पास आता है।

सूर्य कभी मुरझाया नहीं दिखता। हमेशा अपने तेज से दमकता रहता है। उसके सामने कोई बादल आ जाए तो क्रोधित नहीं होता, दुखी भी नहीं होता और बादल टल जाए तो अपनी विजय का घमण्ड भी नहीं दिखाता। सुभाषितकार कहते हैं सूर्य महापुरुष है क्योंकि वह उदय होते समय या अस्त होते समय, सुख या दुःख में एक समान (लाल) दिखाई देता है। सूर्य हमें भी महापुरुष बनने की प्रेरणा देता है।

सूर्य प्रकृति के सौंपे किसी काम के लिए मना भी नहीं करता चाहे वह उसके स्वभाव से थोड़ा विपरीत ही क्यों न हो। देखिए, उसका स्वभाव तो गर्म ही है। ठण्डापन उसे भाता नहीं। अपनी गर्म किरणों के हाथ बढ़ाकर समुद्र से पानी ले जाकर बादल बनवाना उसका मनचाहा काम नहीं होगा पर वह कितना मन से करता है यह। क्योंकि वह जानता है अनेक लोगों का हित जुड़ा हो तो अपनी रुचि महत्वपूर्ण नहीं होती।

आप जानते ही है सूर्य का प्रकाश सात रंगों का समुच्चय है। ये रंग प्रतीक हैं उत्साह के, वीरता के, प्रेम के, करुणा के। हमारे जीवन भी तो ऐसा ही सतरंगी होता है पर सूर्य जैसे इनको समेट कर भी एक सा रहना सिखाता है।

सूर्य के पास अपनी तेजस्विता है। वह आत्म प्रकाश का अक्षय भण्डार है। उससे कोई कितना भी ले ले यह भण्डार घटता नहीं क्योंकि वह अपने लिए कुछ भी बचाना नहीं चाहता। वह देता है इसी से तो देवता है।

पृथ्वी सहित सारा सौर मण्डल उसके चारों ओर चक्कर लगाता रहता है। आखिर जिसमें इतने सद्गुण हो क्यों न घूमता रहे संसार उसके आसपास।

तो संक्रान्ति पर पतंगे उड़ाते हुए जब जब भी सूर्य से आंखें मिल जाएं, तो पलकें बन्द कर पलभर सोचना अवश्य कि कैसे बन सकती है आपकी प्रतिभा भी सूर्य जैसी तेजस्वी।

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- माँ ने कहा था - पवित्रा अग्रवाल ०५
- आजादी अनमोल - अनुरुपा चौधुले ०८
- दोस्ती - डॉ. मंजरी शुक्ला १६
- ओढ ली रजाई - मनोहर चमोली 'मनु' ३०
- नई शुरुआत - डॉ. लीला मोदी ३३
- विश्वासघात बुरी बात - सुरेन्द्र 'अंचल' ४६

कविता

- माँ भारती वरदान दो - स्नेलहता ११
- दयालु बालक - रूपसिंह १४
- सरदी मौसी - अब्दुल मलिक खान १९
- करुँ परीक्षा की तैयारी - रामकुमार मिश्र 'मधुकर' २५
- सेवाभावी दीना - डॉ. बेदमित्र शुक्ला 'मयंक' ३५
- नेताजी सुभाष - सूर्य प्रकाश अष्ठाना ३५
- सुन्दर फूल गुलाब के - डॉ. गिरीशदत्त शर्मा ३९
- चिड़िया घर - डॉ. प्रवीणा अग्रवाल ४८
- तुम्हारे लाड़ले हम माँ - कृष्ण 'शलभ' तृ.आ.

आलेख

- भारतीय संविधान - आकाश शर्मा १२
- महान लोगों की... - हकीमुद्दीन ए. जमीदार ५०

नाटक

- संज्ञा - डॉ. प्रेम भारती २२

विविध

- आओ अपने अंदर झांके - २६
- बिन्दु मिलाओ रंग भरो - राजेश गुजर ३२
- पांच पहेलियाँ - कृष्ण कुमार मिश्र 'अचूक' ३४
- क्या आप जानते हैं? - ४२

स्तम्भ

- कॅरियर दिशा - डॉ. जयंतीलाल भंडारी १८
- आपकी पाती - २४
- जीवन शैली - प्रो. नन्दकिशोर मालानी ४०
- हमारे राज्य पुष्प - डॉ. परशुराम शुक्ल ४३
- पुस्तक परिचय - ४९

बाल लेखनी

- गणतंत्र दिवस - तरु सक्सेना ०६
- माँ की लाज बचाएँ - विनीता कांकेर ०७
- वीर बनूंगा - निलेश वैभव यादव २०
- चुटकुले - अभिलाषा शर्मा ३८
- मेरी चिड़िया बुंदकी - अलिशा सक्सेना ४४

अन्य सभी नियमित स्तंभ एवं मनोरंजन की ढेरों सामग्री

कहानी : पवित्रा अग्रवाल

माँ ने कहा था

संक्रान्ति पास आते ही वरुण ने ऊँचा स्टूल लगा कर अलमारी पर से कुछ पतंगें और चरखी, माँजा नीचे उतार लिया।

माँ ने कहा– ''बेटा वरुण तुमने इतनी सारी पतंगें क्यों जमा की हुई है...जितनी जरूरत हो उतनी ही लाया करो।...पड़े पड़े खराब भी होती हैं।''

वरुण खुश होकर बोला– ''अरे माँ इनमें से एक भी मेरी खरीदी हुई नहीं हैं सब कट कर आई हुई पतंगें है।

''तुम से मना किया हुआ है न फिर भी तुम पतंगे लूटते हो?''

''अरे माँ अपनी छत इतनी बड़ी है कि पतंगें अपने आप आ कर गिर जाती हैं।...वहीं पतंगें मैं जमा कर लेता हूँ।''

''तभी इनमें से कुछ पतंगें खराब भी हो रही हैं, पर तूने सबको संभाल कर क्यों रखा हुआ है?''

''पतंग के दिनों में बहुत गरीब बच्चे अपनी जान की परवाह न करते हुए पतंग लूटने के लिए सड़कों पर भागते फिरते हैं, यह पतंगें उन को दी जा सकती हैं।''

''हाँ माँ आपकी सलाह तो अच्छी है पर पतंगें देखकर उन्हें सहेज कर रखने या खुद ही उड़ाने का लालच आ जाता है।''

एक दिन वरुण मित्रों के साथ क्रिकेट खेल कर लौटा था, उसकी नजर अपने बगीचे में गई। उसने देखा कि बगीचे में एक लड़का घुसा हुआ था और उसने हाथ में एक लोहे की छड़ उठा रखी थी, उस से पतंग निकालने की वह कोशिश कर रहा था।

वरुण एक दम से चिल्लाया– ''अरे यहाँ क्या कर रहे हो?''

लड़के ने डर के मारे लोहे की छड़ वहीं फेंक दी और रोने लगा– ''भैया! में चोर नहीं हूँ। अभी एक पतंग कट कर यहाँ लटक गई थी, उसको निकालने की कोशिश कर रहा था।''

''तुम डरो नहीं मैं तुम्हें चोर नहीं समझ रहा पर

क्या तुम्हें मालूम है कि पेड़ के पास से करंट के तार जा रहे हैं... पतंग निकालने के चक्कर में यदि यह छड़ तारों से छू गई तो तुम अभी यहीं करेंट लगने से मर जाओगें। दो चार रुपए की पतंग के लिए तुम अपनी जान खतरे में क्यों डाल रहे हो?''

''हाँ भैया गलती हो गई...मैंने यह सोचा ही नहीं था पर मैं अभी मरना नहीं चाहता मेरे छोटे भाई को पोलियो है, आज वह पतंग के लिए जिद्द कर रहा था... मैं ने सोचा उसके लिए पतंग ले जाऊँगा तो वह खुश हो जाएगा।''

''तुम्हारे घर में कौन कौन है?''

''माँ है बापू हैं, एक छोटा भाई है। माँ दो घरों का खाना बनाती है...बापू केले की बंडी लगाते हैं। पर उनको शराब पीने की लत है, वह घर में खर्च के लिए कुछ नहीं देते और हम लोगों को बहुत मारते पीटते हैं।''

''तुम शाला जाते हो?''

''हाँ, पास के सरकारी विद्यालय में चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ। पहले मैं खाली समय में एक दुकान में काम भी करता था पर जब से सरकार ने बच्चों से काम कराने पर रोक लगाई है तब से मेरा काम करना बन्द हुआ है।...

''ठीक है, मैं पिताजी से बात करता हूँ शायद वे तुम्हारी पढ़ाई का प्रबंध कर सकें।''

''भैया! आप तो बहुत अच्छे हो, अब मैं चलूँ...दो दिन बाद आऊँगा।''

''तुम्हारा नाम क्या है?''

''शंकर!''

वरुण को अचानक माँ की एक बात याद आ गई। उसने कहा– ''शंकर! तुम दो मिनट यहीं रुको मैं अभी आता हूँ।''

वरुण ने अन्दर से पाँच छह पतंगें और डोर लाकर उसे देते हुए कहा– ''लो यह अपने भाई को दे देना पर उस से कहा वह इन्हें सड़क पर नहीं, किसी सुरक्षित जगह पर उड़ाए।''

पतंगें पाकर शंकर के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई।

खिड़की में से माँ यह सब देखकर बहुत खुश हो रही थीं।

● हैदराबाद (आ.प्र.)

शब्दक्रीडा(१४)

भारत के चिन्ह

न	म	ण	ग	न	ज	हि	क	बा	र
प	मो	अ	ब	व	न्दे	मा	त	र	म्
क	स	र	या	य	गा	गा	न्दी	ई	रं
म	ग	त्य	गा	न्दी	रं	र	रु	प	या
द	न्दी	घ	मे	ति	ब	रं	द	न	रि
अ	बा	ग	मो	व	य	य	ई	ल	क
अ	शो	हि	न्दी	म	ज	दि	रं	म	गा
ते	शो	क	य	ज	ह्ली	य	ल	घ	शो
बा	ज	क	चि	बा	न	ते	ते	र	ली
र	छ	रि	ग	न्ह	न्ह	बा	ई	न्ह	द

बच्चो! शब्दक्रीड़ा में इस बार आपकी अपने देश के संबंध में कुछ सामान्य ज्ञान की परख करनी है। हमेशा की तरह आपको नीचे लिखे अक्षरों में से किसी भी दिशा में क्रमबद्ध अक्षर जोड़ते हुए खोजना है भारत के राष्ट्रीय पशु, पक्षी, वृक्ष, पुष्प, ध्वज, भाषा, मुद्रा, चिन्ह, बोधवाक्य, राजधानी, गान के नाम व गीत मे नाम बारह सही उत्तर खोजने वाला उत्तम, दस खोजने वाला मध्यम व आठ खोजने वाला सामान्य बुद्धि माना जाएगा।

(सही उत्तर इसी अंक में)

बाल लेखनी : विनीता कांकर

माँ की लाज

भगतसिंह सुभाष के जैसे
भारत माँ के लाल कहाएं
वीर सिपाही बन हम बच्चे
अपनी माँ की लाल बचाएं

● मन्दसौर (म.प्र.)

कहानी : अनुरुपा चौघुले

आजादी अनमोल

दुर्गा बाघिन बड़ी चिंता में थी। उसके दोनों नन्हें शावक बड़े गुमसुम से चुपचाप सोए पड़े थे। वे न दूध पी रहे थे, न उसकी पीठ पर चढ़कर उधम मचा रहे थे और न ही एक दूसरे की पूंछ पकड़ कर खींचा खींची खेल रहे थे। बहुत बार पूछने पर बोले–''माँ हमें भी शहर जाना है। वहाँ आसमान को छूती इमारतें देखना है। जगमग रोशनी में नहाती सड़कें देखना है। हवा सी तेज दौड़ती गाड़ियाँ देखना है, बड़ी बड़ी दुकानें देखना है और नए नए खिलौने भी खरीदना है।'' दोनों शावक जिद भरी आवाज में बोल रहे थे। दुर्गा बाघिन बड़ी उलझन में थी कि दोनों बच्चों को यकायक शहर जाने की भला क्या सूझी? आखिर किसने उनके दिमाग में ऐसी बात भरी होगी? बच्चों से बात उगलवाते मालूम पड़ा कि किट्टू बंदरी का नन्हाँ बच्चा चिटपिट जो अक्सर दुर्गा बाघिन के बच्चों से गपियाता रहता है, उसी ने इन बच्चों को बड़ा रस ले–लेकर शहर के बारे में बताया था। होता यूँ था कि चिटपिट बंदर अपनी माँ के पेट से चिपट जाता था और किट्टू बंदरी लंबी लंबी छलांगें भरकर उसे पूरा शहर घुमा लाती थी।

दुर्गा बाघिन ने इस पर अपने बच्चों को समझाते हुए कहा– ''बच्चों तुम अभी नादान हो। तुम्हें नहीं मालूम कि हम तीनों अगर शहर में इंसानों की बस्ती में चले गए तो वे हमे कैद करके चिड़ियाघर के पिंजरों में हमेशा–हमेशा के लिए बंद कर देंगे या फिर बंदूक की गोली दागकर हमें मार ही डालेंगे। इसलिए मेरे बच्चो! शहर जाने की जिद छोड़ दो।'' लेकिन दोनों बच्चों के मन में तो शहर जाने की जिद बहुत गहरे पैठ गई थी।

उस दिन शाम को रोज की तरह दर्शना हथिनी, दुर्गा बाघिन से मिलने आई। दोनों का बचपन इसी जंगल में साथ–साथ बीता था, इस नाते दोनों में अच्छी मित्रता थी। दुर्गा बाघिन ने अपनी चिंता दर्शना हथिनी को बताई। सुनकर दर्शना भी गहरे सोच में पड़ गई कि कहीं जिद में अड़े बच्चे बिना बताए शहर की ओर न चले जाएँ, वर्षों पहले सर्कस में कैद अपनी बहन की याद में दर्शना हाथिनी की आँखें भर आई थी। उसने बच्चों से कहा– ''चलो चलो जल्दी से मेरी सूंड पर चढ़कर मेरी पीठ पर जा बैठो। हम रोज की तरह जंगल की सैर करने जाएंगे।''

''नही मौसी! हमें नहीं करनी जंगल की सैर। रोज रोज वही पेड़, वही झरने, वही पहाड़ देख देखकर हम उकता गए हैं।'' दोनों शावकों ने ठुनकते हुए जवाब दिया। बाद के तीन दिन यूं ही खामोश और अनमने से बीत गए। दोनों बच्चे अभी भी रूठे हुए थे।

तभी पास के पेड़ पर बैठी किट्टु बंदरी के आर्त स्वरों में रोने की आवाज सुनाई दी। दुर्गा और दर्शना के कारण पूछा तो बोली–''शहर में घूमते हुए चिटपिट उससे बिछड़ गया। कुछ ही देर में चिटपिट को एक मदारी ने पकड़ लिया।'' किट्टु बंदरी रोते रोते कहने लगी कि अब वो अपने बच्चे चिटपिट बंदर को हमेशा के लिए खो चुकी है। वह मदारी मेरे चिटपिट को थका थका कर नाच नचवाएगा। लोगों का मनोरंजन होगा, वे मदारी को पैसे देंगे लेकिन मेरे चिटपिट पर क्या गुजरेगी? किट्टु बंदरी की आँखों से तो मानों आसुओं की झड़ी लग गई थी। बात बड़े दुःख की थी लेकिन चिटपिट को जंगल में वापस लाना मुश्किल ही नहीं असंभव काम था। किट्टु बंदरी की बातें सुनकर दुर्गा बाघिन के बच्चे सहम गए थे, वे अपनी माँ से लिपटते हुए बोले–''हमें शहर नहीं जाना है। हम अपने इस प्यारे जंगल में ही खेलेंगे।''

उसी पेड़ पर बैठा विक्रम तोता, किट्टु बंदरी की सारी बातें सुन रहा था। वो बोला–''मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ।'' किट्टु बंदरी हर्ष मिश्रित विस्मय से बोली– ''क्या तुम सच में मेरे चिटपिट को उस मदारी के चंगुल से छुड़वा सकते हो?'' कोशिश तो कर सकता हूँ। चलो मेरे साथ।'' कहकर विक्रम तोता शहर की दिशा में उड़ने लगा। जहाँ तोते ने आने को कहा था, किट्टु बंदरी वहाँ पहुँच गई। वह एक वन अधिकारी का घर था। विक्रम तोते की उनसे अच्छी मित्रता थी। उनके यहाँ जाकर विक्रम तोता रोज भीगे चने और हरी मिर्च खाता था। उनके मन में पशु–पक्षियों के लिए बहुत प्रेम भाव था। पंछियों को पिंजरे में कैद करने से उन्हें सख्त चिढ़ थी। चूंकि तोते इंसानों की बोली बोल सकते हैं सो उसने अधिकारी साहब को बताया ''मदारी आया, बंदर पकड़ा'' उसने दो तीन बार अपनी बात दोहराई। अधिकारी जी को सारा माजरा समझ में आ गया था। उन्होंने पुलिस की मदद से मदारी को धर दबोचा और इस तरह विक्रम तोते की मदद से चिटपिट बंदर वापस मिल गया था।

जंगल में ये बात हवा की तरह फैल गई थी। दुर्गा बाघिन के बच्चों के साथ अन्य जंगली जानवरों के बच्चे भी चिटपिट बंदर के साथ मिलकर गाने लगे थे।

प्यारा–प्यारा, जंगल हमारा
बरगद के झूलों पर झूले,
पेड़ों के पीछे छुप खेलें,
झरनों में जा खूब नहाएँ,
हरियाली में लोट लगाएँ,
आजादी का सुख है न्यारा,
हरा भरा है जंगल हमारा।।

● इन्दौर (म.प्र.)

कविता बनाओ १५

इस चित्र पर आधारित अपनी कविता की चार पंक्तियां बनाइए और देवपुत्र के पते पर भेज दीजिए। सर्वश्रेष्ठ पंक्तियां फरवरी माह के अंक में प्रकाशित की जाएंगी।

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

देवपुत्र प्रश्नमंच ?

(१) अपने देश भारत का नामकरण किसके नाम पर हुआ?

१. श्रीराम के भाई भरत
२. जड़भरत
३. शकुन्तला पुत्र भरत

(२) अपने देश के राष्ट्रीय ध्वज में वस्तुतः कुल कितने रंग हैं?

१. चार
२. तीन
३. पांच

(३) हिन्दी राजभाषा कब घोषित की गई?

१. १४ सितम्बर १९४७
२. १४ सितम्बर १९५०
३. १४ सितम्बर १९४९

(४) वन्देमातरम् गीत की रचना किस सन् में हुई?

१. ७ नवम्बर १८७५
२. २६ जनवरी १९५०
३. १५ अगस्त १९४७

(५) जनगणमन का प्रथम प्रकाशन कब हुआ था?

१. जनवरी १९१२
२. जनवरी १९५०
३. जनवरी १९४७

(६) जगगणमन को राष्ट्रीय गीत कब घोषित किया गया?

१. १५ अगस्त १९४७
२. २४ जनवरी १९५०
३. १० मई १८५७

(७) मोर को राष्ट्रीय पक्षी कब घोषित किया गया?

१. १९४५
२. १९४७
३. १९६३

(८) बाघ राष्ट्रीय पशु किस सन् में घोषित हुआ?

१. १९७३
२. १९७०
३. १९८०

(९) इसके पूर्व हमारा राष्ट्रीय पशु कौन था?

१. हाथी
२. घोड़ा
३. सिंह

(१०) हमारी राष्ट्रीय मुद्रा अशोक स्तम्भ से ली है यह स्तंभ कहा स्थित है?

१. दिल्ली
२. सारनाथ
३. सांची

(उत्तर इसी अंक में)

(सरस्वती जयंती : बसंत पंचमी)

कविता : सुश्री स्नेहलता

माँ भारती! वरदान दो!!

संसार सारा एक हो।
हर व्यक्ति जग का नेक हो।।
मिट जाए तम अज्ञान का,
सद्‌बुद्धि विद्या, ज्ञान दो।
माँ भारती! वरदान दो।।
बन्धुत्व की हो भावना।
परमार्थ की हो कामना।।
हित हो मनुजता का सदा,
गन्तव्य एक महान दो।
माँ भारती! वरदान दो।।
विख्यात भारतवर्ष हो।
इसका सतत् उत्कर्ष हो।।
यह हो व्यवस्थित, संगठित,
इसकी प्रगति पर ध्यान दो।
माँ भारती! वरदान दो।।
सहमति, सुमति का वास हो।
नव हर्ष, नव उल्लास हो।।
सर्वत्र सुख हो, शांति हो,
सबको उचित सम्मान दो।
माँ भारती! वरदान दो।।

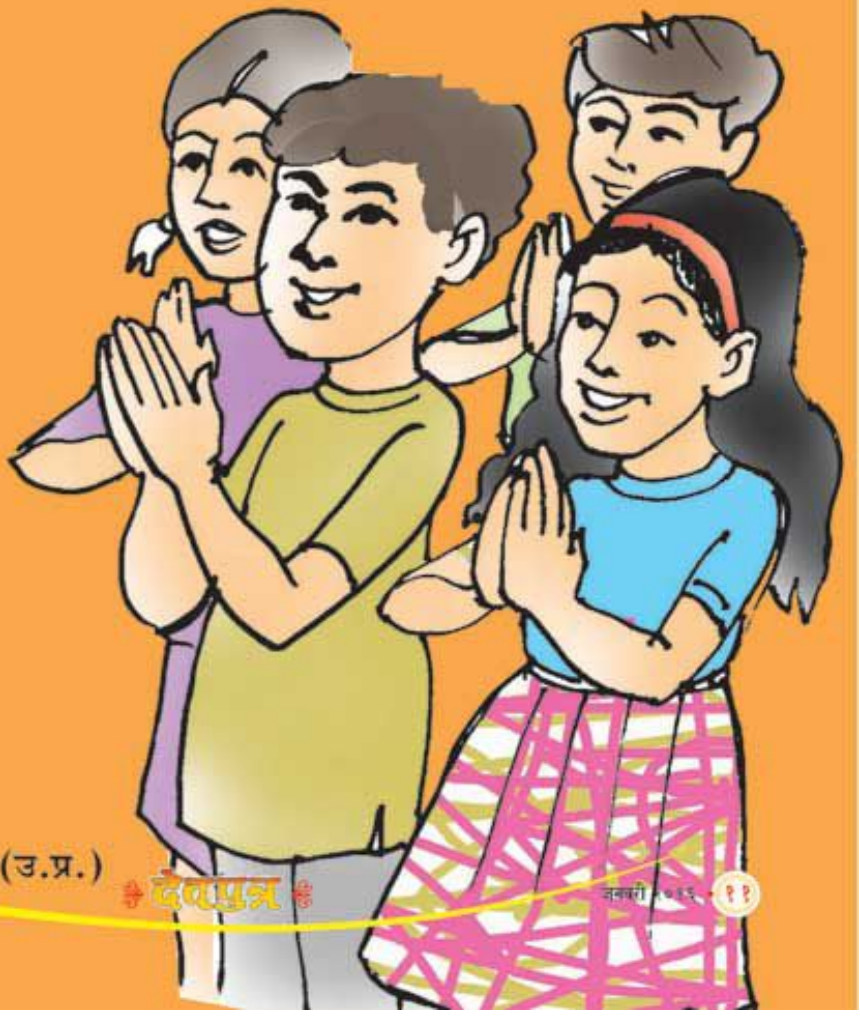

• लखनऊ (उ.प्र.)

भारतीय संविधान

आलेख : आकाश शर्मा

सन् १९४७ का वर्ष भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। इसी वर्ष भारत अपनी सदियों की दासता से मुक्त हुआ था। इतने बलिदान के फलस्वरूप अर्जित इस स्वतंत्रता को संजोए रखने के लिए अभी कुछ करना था। सर्वप्रथम देश के प्रशासन का महत्वपूर्ण कार्य सामने था, जिसके लिए हमारे नेताओं को एक सुदृढ़ ढाँचा निर्मित करना था। भारत को एक संविधान की रचना करनी थी। यह कार्य सरल नहीं था। अनेक बाधाएं थी। इन सबके बावजूद संविधान निर्मात्री सभा ने अथक परिश्रम तथा कार्यकुशलता का परिचय दिया और एक सर्वमान्य संविधान की रचना करने में सफल रही। स्वतंत्रता के पवित्र दिन के पश्चात दूसरा ऐतिहासिक महत्व का दिन था २६ जनवरी, १९५०। जब भारत का संविधान लागू किया गया जिसने भारत को संसार के समक्ष एक नए गणतंत्र के रूप में प्रस्तुत किया।

संविधान की परिभाषा– संविधान से तात्पर्य ऐसे दस्तावेज से है जिसकी एक विशिष्ट विधिक पवित्रता होती है जो राज्य सरकार के अंगों (कार्यपालिका, विधायिका, न्यायपालिका) ढांचे को और उनके प्रमुख कार्यों को बताता है और उन अंगों के संचालन के लिए भी मार्गदर्शन करता है।

किसी भी देश का संविधान एक ऐतिहासिक विकास का परिणाम होता है। अतएव भारतीय संविधान के आधुनिक विकसित रूप को समझने के लिए उसकी ऐतिहासिक प्रक्रिया के सम्यक् ज्ञान के बिना हम संविधान को भलीभांति नहीं समझ सकते हैं। किन्तु इसके लिए हमें अंग्रेजों के भारत आगमन काल से पहले नहीं जाना होगा। क्योंकि भारत में वर्तमान संवैधानिक परम्परा का विकास अंग्रेजों के भारत में आगमन के समय से ही प्रारंभ हुआ। आधुनिक राजनीतिक संस्थाओं का उद्भव एवं विकास इसी काल में हुआ। भारतीय संविधान के ऐतिहासिक विकास का काल सन् १६०० ई. से प्रारम्भ हुआ। सर

आइवर जेनिंग्स ने भारतीय संविधान को विश्व का सबसे बड़ा और विस्तृत संविधान कहा है।

जेनिग्स का यह कथन वस्तुतः ठीक है मूल संविधान में कुल ३९५ अनुच्छेद थे जो २२ भागों में विभाजित थे और इसमें ८ अनुसूचियाँ थी किन्तु ८६ वें संविधान संशोधन अधिनियम २००२ के पश्चात संविधान में अब कुल ४४६ अनुच्छेद हो गए हैं। जो २६ भागों में विभाजित हैं और १२ अनुसूचियाँ हैं।

संविधान निर्माताओं ने विश्व के सभी संविधानों से अनुभव प्राप्त किया था और उन्हें उनके संचालन में हुई अनेक कठिनाइयों के बारे में ज्ञान था। संविधान निर्माताओं ने इससे लाभ उठाया और उन्होने विश्व के सभी संविधानों की अच्छी बातों को भारतीय संविधान में समाविष्ट किया जिससे भविष्य में संविधान के संचालन में कठिनाईयाँ न उत्पन्न हो। इस प्रकार अमेरिका के संविधान से मूल अधिकार, ब्रिटेन के संविधान से संसदीय प्रणाली, आयरलेंड के संविधान से राज्य के नीति निर्देशक तत्व और जर्मनी के संविधान तथा भारत सरकार अधिनियम १९३५ से आपात् उपबंधों को लेकर भारतीय संविधान का निर्माण किया गया है।

संविधान निर्माताओं ने संविधान को मुख्यतया दो वर्गों में विभाजित किया है– परिसंघात्मक और एकात्मक।

एकात्मक संविधान वह संविधान है जिसके अंतर्गत सारी शक्तियाँ एक ही सरकार में निहित होती है जो प्रायः केन्द्रीय सरकार होती है। प्रान्तों को केन्द्रीय सरकार के अधीन रहना पड़ता है इसके विपरीत परिसंघात्मक संविधान वह संविधान है जिसमें शक्तियों का केन्द्र एवं राज्यों में विभाजन होता है और दोनों सरकार अपने अपने क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से कार्य करती हैं।

भारतीय संविधान की प्रकृति के बारे में विधिशास्त्रियों में काफी मतभेद रहा है संविधान निर्माताओं के अनुसार भारतीय संविधान एक परिसंघात्मक संविधान है।

भारतीय संविधान के अध्याय ४ में संविधान के उद्देश्य को बताया गया है।

प्रायः प्रत्येक अधिनियम के प्रारम्भ में एक उद्देशिका रहती है उद्देशिका में उन उद्देश्यों का उल्लेख किया जाता है जिनकी प्राप्ति के लिए अधिनियम पारित किया जाता है।

भारतीय संविधान के अध्याय ६ में नागरिकता को बताया गया है नागरिकता से संबंधित अनुच्छेद ५ से ११ तक हैं।

भारतीय संविधान का अध्याय ७ मूल अधिकारों को बताता है। जो अनुच्छेद १२ से ३५ तक है।

भारतीय संविधान की एक प्रमुख विशेषता जनता के मूल अधिकारों की घोषणा है संविधान के भाग ३ में इन अधिकारों का विशद् रूप से उल्लेख किया गया है। भारतीय संविधान ने जितने विस्तृत और व्यापक रूप में इन अधिकारों का उल्लेख

किया गया है उतना संसार के किसी भी लिखित संघात्मक संविधान में नहीं किया गया है। इसलिए भारतीय संविधान को भारत का अधिकार पत्र (**Magna Carta**) कहा जाता है।

संविधान के भाग ४ अध्याय १८ में राज्य के नीति निर्देशक तत्वों को बताया गया है। जो अनुच्छेद ३६ से ५१ तक है। नीति निर्देशक तत्वों में वे उद्देश्य एवं लक्ष्य निहित हैं जिनका पालन करना राज्य का कर्तव्य है। संविधान के ४२वें संशोधन अधिनियम १९७६ द्वारा संविधान के भाग ४ के पश्चात एक नया भाग ४क जोड़ा गया है जिसके द्वारा पहली बार संविधान में नागरिकों के मूल कर्तव्यों को समाविष्ट किया गया है। नए अनुच्छेद ५१क में भारत के प्रत्येक नागरिक के कर्तव्यों का उल्लेख है। भारतीय संविधान के अध्याय २० संघ की कार्यपलिका एवं राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति से संबंधित है जो कि अनुच्छेद ५२ से ७८ तक है।

भारतीय संविधान में केन्द्रीय विधान मंडल को अनुच्छेद ७९ से १२२ तक अध्याय २१ में बताया गया है। एवं अध्याय २२ में संघ की न्यायपालिका उच्चतम न्यायालय अनुच्छेद १२४ से १४७ तक है।

यह भारत की जनता की विशेषता है कि उसने अपने देश के संविधान को अपने धर्मग्रंथों से भी ऊपर रखकर सम्मान दिया है। बच्चो! आप भी अपने बड़ो से यदि इस आलेख में आए कुछ शब्द समझ नहीं पाए हों उन्हें समझने का प्रयास कीजिए। क्योंकि किसी का भी पूर्ण सम्मान उसे समझकर ही किया जा सकता है।

● **इन्दौर**

(लेखक उच्चन्यायालय इन्दौर में वरिष्ठ अधिवक्ता है।)

दयालु बालक

कविता : रूपसिंह

माँ ने देखा, उस कमरे में,
बालक जहाँ पढ़ा करता है अलमारी थी किताब की,
चींटी उससे निकल रहीं हैं।
दो रोटी जो वही पड़ीं थी,
बेटा आया विद्यालय से,
माँ ने पूछा– ये रोटियाँ कहाँ से आई?
प्रश्न सुना, बालक शरमाया।
बार–बार पूछे जाने पर, कहा कि माँ, भोजन से रोटियाँ बचाकर
दो रोटी प्रतिदिन देता, भिक्षुक बुढ़िया को,
कल वह आई नहीं,
इसी से अलमारी में रखी हुई हैं।
हर्षित माँ ने गोद उठाकर गले लगाया।
अन्य न कोई बालक था
नेता सुभाष थे।

● **महरौली (उ.प्र.)**

जादुई दिनदर्शक कैलेण्डर

वर्ष २०१६

सुशील कुमार माथुर

प्रिय बच्चो, मैं आज आप लोगों को एक जादुई कैलेण्डर बतलाने जा रहा हूँ। इसके लिए आपको बस नीचे दी गई कुछ संख्याएं भली भांति याद करनी होगी।

जनवरी – ४
फरवरी – ०
मार्च – १
अप्रैल – ४
मई – ६
जून – २
जुलाई – ४
अगस्त – ०
सितम्बर – ३
अक्टूबर – ५
नवम्बर – १
दिसम्बर – ३

इनके माध्मय से आप अपने मित्र को यह आसानी से बता सकते हैं कि वर्ष २०१६ के किस माह की कौनसी तारीख को कौन सा वार है। उदाहरणार्थ – माना कि आपके मित्र ने आप से पूछा १४ जनवरी को कौन सा वार है तब आप मन ही मन में १४ में, जनवरी माह का अंक ४ जोड़ दीजिए। इस पर कुल योग १८ आया। अब आप मन ही मन में कुल योग में ७ का भाग दे दीजिए। क्योंकि सप्ताह के केवल सात ही दिन होते हैं। शेष ४ बचा। आप मित्र को तत्काल बता दीजिए कि १४ जनवरी को गुरुवार है।

मित्रो, वार बतलाते अगर आपके शेष ० बचे तो रविवार होगा १ बचे तो सोमवार, २ बचे तो मंगलवार, ३ बचे तो बुधवार होगा। इस प्रकार आप ६ के अंक तक पहुंच जाए।

कुल योग सात से कम आए तो ऐसी स्थिति में आप कुल योग के आधार पर ही वार बता दीजिए। अब बताइए यह है कि नहीं जादुई दिनदर्शक मतलब कैलेण्डर।

• मेड़तासिटी (राज.)

षट्भुजा

देवांशु वत्स

खेलने के नियम

सफेद बक्से में १ से ९ तक के अंकों को इस तरह से लिखें कि तीर की सीध में आने वाले बक्सों के अंकों का योग उसी तीर वाले त्रिभुज में लिखे अंक जितना हो।

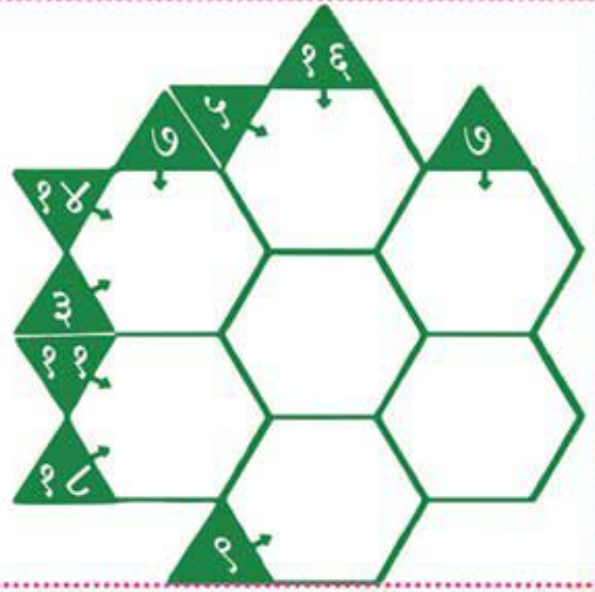

कहानी : डॉ. मंजरी शुक्ला

दोस्ती

''अरे सम्यक! तुमने कुछ सुना..'' शालिनी अपनी बड़ी बड़ी आँखें मटकाती हुई बोली।

''क्या हुआ...जल्दी बताओ...'' हमेशा की तरह दस साल का सम्यक हड़बड़ाते हुए बोला।

''वो निकिता है ना... उसके मामा मुम्बई से गुड़िया लाए हैं और...''

''तो क्या हुआ? हम सबके पास भी तो ढेर सारी गुड़ियाएं है...'' मुन्नी अपनी छोटी सी चोटी का लाल रिबन बाँधते हुए बोली।

''रुको रुको, पहले जरा मुझे नीचे तो उतरने दो...कहते'' हुए राजू आम के पेड़ से सरपट उतरता हुआ बोला।

''अब बोलूं...या पंडित जी को भी बुलाना बाकी है...'' शालिनी ने नाराज होते हुए कहा।

''नहीं...नहीं...हमारे पास नारियल खरीदने के पैसे नहीं हैं, हम भला उनकी दक्षिणा कहाँ से देंगे...'' निमिता गन्ना चूसते हुए बोली।

ये सुनकर शालिनी और सभी बच्चे जोरों से हँस पड़े।

शालिनी बोली–''हमारे जैसी गुड़िया नहीं है, उसके पास, पुराने कपड़ों और साड़ियों की बनी हुई...''

''फिर, फिर भला कैसी है...'' राजू ने आश्चर्य से पूछा।

''अरे, उसके पास तो बहुत सुन्दर गोरी चिट्टी गुड़िया है...'' शालिनी ऐसे बोली मानो वो गुड़िया उसे वहीं पर दिखाई दे रही हो।

''अच्छा...तूने देखीं है क्या...हाँ....निकिता दरवाजे पर अपनी गुड़िया को सुला रही थी तभी मैंने देखा।''

''सुला रही थी...सुबह के समय...सम्यक ने टोका।''

''चुप रह तू...''शालिनी गुस्से से बोली।

''और पता है उसकी आँखें भी लेटने पर बंद हो जाती थी।''

''मैं उसके घर की सामने से निकल रही थी कि इतनी सुन्दर गुड़िया देखकर रुक गई। पता है वो गुड़िया बोलती भी है।''

''क्या सच...'' निकिता ने अपना हाथ गाल पर रखते हुए बड़े ही आश्चर्य से पूछा।

''हाँ...जब निकिता ने गुड़िया से कहा– शालिनी को नमस्ते बोल दो'' तो गुड़िया ने हाथ जोड़कर नमस्ते बोला।

''सच्ची...'' राजू ने अपनी नेकर ठीक करते हुए कहा।

''और क्या, मैं भला क्या झूठ बोल रही हूँ, ना विश्वास हो तो चलकर देख लो।''

''हाँ...क्यों नहीं चलो चलो।''

कहते हुए सभी बच्चे भागे–भागे पहुँचे निकिता के घर की ओर।

निकिता बाहर बरामदे में ही बैठी अपनी गुड़िया के घुंघराले बाल एक छोटी सी गुलाबी कँघी से सँवार रही थी।

''निकिता...'' राजू खुशी से चिल्लाया।

''आओ आओ, देखो, मेरी कितनी सुन्दर गुड़िया, मेरे मामा लाए हैं मुम्बई से।''

कहते हुए निकिता ने गुड़िया राजू को पकड़ा दी।

राजू के हाथ में आते ही गुड़िया बोली– ''नमस्ते! कैसे हो?''

''अरे! नमस्ते बोली...गुड़िया नमस्ते बोली...'' शालिनी ताली बजाते हुए चहकी।

''मैंने पहली बार देखा कि गुड़िया भी बोलती है...'' सम्यक ने गुड़िया को बड़े ही प्यार से छूते हुए कहा।

''अब हम सब रोज इससे खेला करेंगे...'' सम्यक गुड़िया की नन्हीं–नन्हीं चमकीली सैंडल छूते हुए बोला।

''हाँ...क्यों नहीं...हम सब इससे रोज खेलेंगे...तुम सब कल इसी समय पर आ जाना।''

''हाँ...हाँ... हम सब समय पर आ जाएँगे...कहते हुए वे सभी वहाँ से हँसते मुस्कुराते चले गए।''

दूसरे दिन जब सब खुशी खुशी निकिता के घर पहुँचे, तो निकिता को उदास बैठा देखकर आश्चर्य में पड़ गए।

''क्या हुआ निकिता, तुम्हारा चेहरा इतना उतरा हुआ क्यों है...राजू ने घबराते हुए पूछा।''

निकिता ने राजू की तरफ देखा और फूट–फूट कर रोने लगी।

''क्या हुआ, बोलो तो क्या हुआ...'' शालिनी ने उसका हाथ पकड़ते हुए बड़े ही प्यार से पूछा।

''मेरी गुड़िया...'' कहते हुए निकिता सुबकने लगी।

''क्या हुआ गुड़िया को...'' सब एक साथ चिल्लाए।

वह...वह मेरे हाथ से छूटकर वो नील वाली पानी की बाल्टी में गिर गई...और पूरी खराब हो गई...वह देखो उस कोने में सूख रही है।''

सबने उस तरफ देखा तो गंजी गुड़िया काली और नीली सी दिख रही थी। और दिखने में बहुत खराब लग रही थी। सबके चेहरे दुःख के मारे उतर गए।

निकिता ने अपनी नीली फ्रॉक से आँसू पोंछते हुए कहा–''अब तुम सब मेरे साथ नहीं खेलोगे ना। मैं तुम लोगों की तरह भाग दौड़ नहीं सकती ना, इसलिए मामा यह गुड़िया लाए थे कि फिर मेरे साथी मित्र यहाँ बैठकर गुड़िया के साथ खेलेंगे।''

ये सुनकर सभी सन्न रह गए। निकिता का एक पैर पोलियो का टीका नहीं लगने के कारण बेकार हो गया था और इस वजह से वे सब शाम को पकड़म पकड़ाई या छुपम–छुपाई खेलते समय उसे बुलाने नहीं आते थे। पर आज पहली बार उन्हें निकिता के दुःख का एहसास हुआ।

राजू और शालिनी का दुःख के मारे गला भर आया।

तभी सम्यक ने गुलाटियाँ लगानी शुरु की और वह गुड़िया की तरह ही हँसा।

फिर क्या था सब समझ गए कि उन्हें क्या करना था।

शालिनी गुड़िया की तरह खड़ी हो गई और हँसते हुए बोली ''नमस्ते, कैसे हो?''

राजू जो कि पेड़ों पर चढ़ने उतरने में कुशल था...दौड़कर आम के पेड़ पर चढ़ गया और बोला– ''निकिता मैं यहाँ रोज छुपूँगा और तुम मुझे ढूँढोगी। और मैं नाचूँगा'' कहते हुए सम्यक नितिका की चारों और घूमने लगा...और वह तो बस बेतहाशा हँसे जा रही थी...हँसे जा रही थी...आखिर उसे एक गुड़िया के बदले इतने सारे दोस्त जो मिल गए थे।

● **इलाहाबाद (उ.प्र.)**

मनोविज्ञान के क्षेत्र में कॅरियर के चमकीले अवसर

डॉ. जयंतीलाल भण्डारी

चिकित्सा, समाजसेवा तथा रोमांच से भरपूर क्षेत्र है मनोविज्ञान का। भूमंडलीकरण और उदारीकरण के दौर में आदमी की स्थिति जैसे–जैसे कमजोर होती जा रही है, मनोविज्ञान की उपयोगिता बढ़ती जा रही है। जीवन में तनाव हो, परेशानी हो या अन्य प्रकार की समस्याएँ हो, इन्हें सुलझाने में मनोविज्ञान की अहमियत बहुत बढ़ गई है। मनोविज्ञान की इस उपयोगिता को देखते हुए ही छात्रों में मनोविज्ञान के प्रति आकर्षण बढ़ा है। हालात यह है कि प्रमुख विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान के पाठ्यक्रमों में आसानी से दाखिला ही नहीं मिलता है। मनोविज्ञान की बढ़ती उपयोगिता के कारण मनोविज्ञान स्कूल शिक्षा के स्तर के पाठ्यक्रम का भी हिस्सा बनने जा रहा है। आने वाले दिनों में इसे स्कूली स्तर पर भी पढ़ाया जाने लगेगा। इस विषय में स्नातक तथा स्नातकोत्तर करने वालों के लिए कॅरियर के बहुत उजले अवसर उपलब्ध हो जाते हैं।

मानव का मस्तिष्क अत्याधिक जटिल है तथा उतनी ही जटिल है, उसकी कार्य पद्धति। मनोविज्ञान हमें मानव मस्तिष्क की जानकारी प्रदान करता हैं। मनोविज्ञान में हम मानव मस्तिष्क की प्रकृति, प्रक्रिया, प्रतिक्रिया तथा इससे जुड़े अन्य पहलुओं का अध्ययन करते हैं। मनोवैज्ञानिक मनुष्य की सोच तथा मनुष्य की प्रगति तथा विकास के विभिन्न चरणों में उसकी आचरण पद्धति को समझने का प्रयास करते हैं। जो व्यक्ति इस जटिलता को समझना चाहते हैं कि मनुष्य का मस्तिष्क कैसे सोचता हैं, क्रिया एवं प्रतिक्रया कैसे करता है, तो वह अपने अध्ययन तथा करियर के क्षेत्र रूप में मनोविज्ञान का चयन कर सकता है। मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षा, विकास , स्वास्थ्य, उद्योग, प्रबंधन आदि क्षेत्रों में विस्तृत रूप से लागू होता है। मनोविज्ञान में अच्छी व्यावसायिक योग्यता तथा सही विशेषज्ञता रखने वाले व्यक्ति निश्चित तौर पर एक अच्छा कॅरियर प्राप्त कर सकते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य की तरह मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए व्यापक अध्ययन एवं अनुसंधान किया जा चुका है तथा इस क्षेत्र में और खोज की जा रही है। यह कार्य मनोविज्ञान के अंतर्गत किया जाता है।

मनोविज्ञान में आकर्षक करियर बनाने के लिए व्यक्तियों, उनकी सोच पद्धतियों, सामाजिक प्रवृत्तियों तथा मानव संबंधों की जटिलताओं में रुचि होनी चाहिए। अपने कॅरियर में सफल होने के लिए आपको अच्छे संचार कौशल, संवेदनशीलता, धैर्य सहानुभूति वास्तविकता एवं ऐसे अन्य गुणों का विकास करने की आवश्यकता होगी। एक स्वतंत्र विषय के रुप में मनोविज्ञान का अध्ययन अधिकांशतः कला विधा में बारहवीं स्तर पर किया जा सकता है। स्नातक स्तर पर इस विषय का अध्ययन अन्य विषयों के एक युग्मक के साथ किया जा सकता है। कई अन्य विषयों की तरह मनोविज्ञान में भी ऑनर्स पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। स्नातक स्तर का मनोविज्ञान का अध्ययन इस विषय की सामान्य जानकारी देता है और मनोविज्ञान की सभी मुख्य शाखाओं की प्रारंभिक जानकारी इसमें शामिल होती है। मनोविज्ञान में एक व्यावसायिक कॅरियर बनाने के लिए किसी भी व्यक्ति को इस विषय में स्नातकोत्तर अध्ययन करना चाहिए। यह अध्ययन किसी विशेष शाखा में विशेषज्ञता भी दिलाता है। एक साधारण डिग्रीधारी व्यक्ति को इस विषय में सीधे जुड़े अच्छे अवसर प्राप्त नहीं होते। मनोविज्ञान में पी–एच.डी. डिग्री राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उच्च कॅरियर दिला सकती है। देश के लगभग सभी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान

में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। इन पाठ्यक्रमों की अवधि सामान्यतः दो वर्ष होती है। राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त कुछ ऐसे संस्थान हैं जो मनोविज्ञान में विशेषज्ञता पाठ्यक्रम चलाते हैं।

एक मनोवैज्ञानिक के रूप में आपका कार्य क्षेत्र मुख्य रूप से आपके द्वारा चुनी गई विशेषज्ञता पर निर्भर करेगा। इसका यह अर्थ नहीं है कि सामान्य मनोवैज्ञानिकों के लिए कॅरियर उपलब्ध नहीं होता। मनोवैज्ञानिकों के लिए औद्योगिक एवं सेवा संगठनों, बड़े अस्पतालों, स्कूलों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों सहित शैक्षिक संस्थाओं, व्यावसायिक मार्गदर्शन केन्द्रों, समाज कल्याण संगठनों, पुनर्वास केन्द्रों तथा प्रसिद्ध गैर सरकारी संगठनों,में कार्य के अवसर उपलब्ध होते हैं। कई मामलों में, मनोवैज्ञानिक को मानव संसाधन विभागों तथत्त कॉर्पोरेट जगत के प्रशिक्षण केन्द्रों में कार्य के अवसर प्राप्त होते हैं। बैंकिंग कार्मिक चयन संस्थान (आईबीपीएस), संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) जैसे संगठनों को भी मनोवैज्ञानिकों की सेवाओं की आवश्यकता होती है। अध्यापन तथा अनुसंधान अवसर व्यापक रूप में उपलब्ध होते हैं। किसी भी विकसित देश में इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा तथा अनुसंधान किया जा सकता है, क्योंकि इन देशों में सामाजिक विज्ञान विषयों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है और मनोविज्ञान भी इनमें शामिल एक विषय है। कई मनोवैज्ञानिक अपने निजी क्लीनिक अथवा अपने काउंसलिंग सेंटर को प्राथमिकता देते हैं, ऐसा अपना अध्ययन पूरा कर लेने के बाद तथा कुछ अनुभव प्राप्त करने के बाद किया जा सकता है। मनोविज्ञान में अच्छी व्यावसायिक योग्यता तथा सही विशेषज्ञता रखने वाले व्यक्ति निश्चित तौर पर एक अच्छा कॅरियर प्राप्त कर सकते हैं।

गौरतलब है कि १९९१ के बाद देश में बहुराष्ट्रीय कंपनियों की बाढ़ सी आ गई है। इसके अलावा स्वदेशी निजी कंपनियों का जाल भी बहुत फैल गया है। इन कंपनियों के एच.आर. यानी ह्यूमन रिसोर्स विभाग में मनोविज्ञान के छात्रों को विशेष तौर पर नियुक्त किया जाता

सरदी मौसी

अब्दुल मलिक खान

ठंडी-ठंडी सांस छोड़ती
सरदी मौसी आई,
लगी पूछने घर में कितने
कम्बल और रजाई।
कितने स्वेटर, कितने मफलर
कितने शाल दुशाले,
उसके आते ही अम्मा ने
बाहर सभी निकाले।
थर-थर करती बोली मौसी
ये तो कम हैं भाई,
और मंगाओ और मंगाओ
कम्बल और रजाई।

● भवानीमण्डी (राज.)

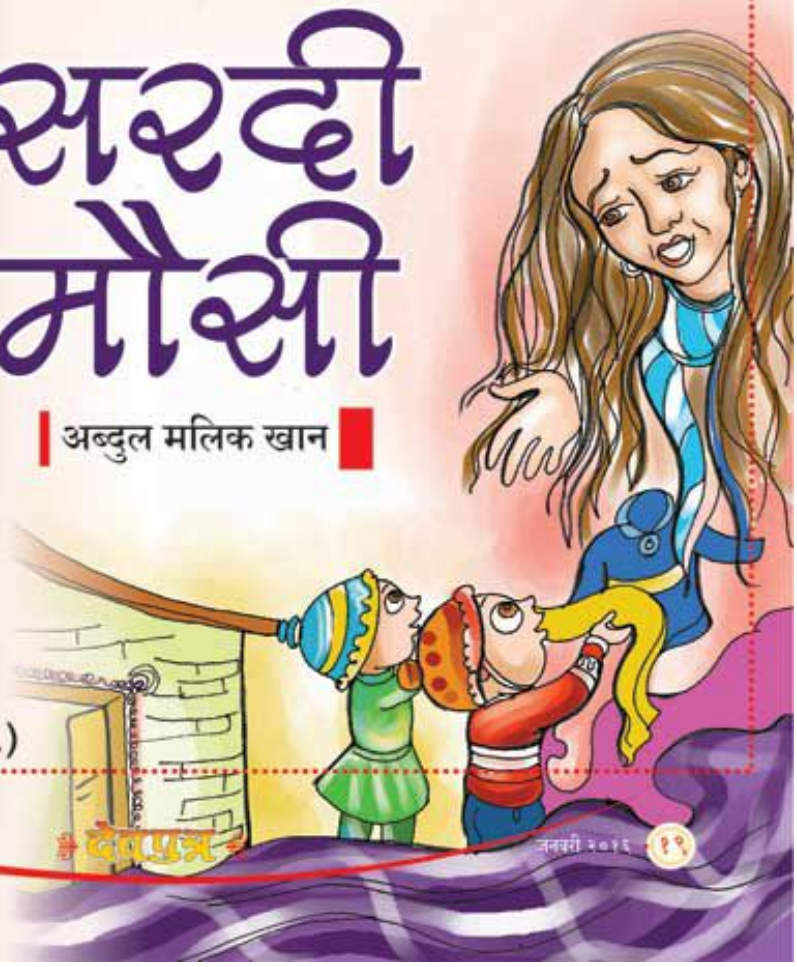

है। कंपनियाँ कर्मचारियों की नियुक्ति, प्रशिक्षण तथा उनकी सॉफ्ट स्किल के लिए मनोविज्ञान के विशेषज्ञों को रखती है। कंपनी में कर्मचारियों के मानसिक तनाव, कम करने का माहौल आदि की परख के लिए भी मनोविज्ञान के विशेषज्ञ उपयोगी साबित हो रहे हैं। कंपनी या संस्थान में किसी भी कर्मचारी को प्रशिक्षण का मनोविज्ञान के विशेषज्ञ हमेशा केन्द्र में रहते हैं। करियर की दृष्टि से दूसरा क्षेत्र अस्पतालों में है। यहाँ मनोरोगों के इलाज में मनोचिकित्सकों के साथ टीम बनाकर मनोविज्ञान के छात्र काम करते हैं। मानव मस्तिष्क गतिविधयों को समझने, उनकी उलझनों को सुलझाने, मनोविकारों को दूर करने में मनोचिकित्सकों मनोवैज्ञानिकों की भर्ती की जाने लगी है। समाज में मानवीय मूल्यों व चेतनाओं को जगाने में एनजीओ यानी स्वयंसेवी संगठन मनोविज्ञान के छात्रों की सेवा बखूबी ले रहे हैं। वे डेवलपमेंट प्रोग्राम में ड्रग्स का उपयोग रोकने, एचआईवी एड्स से पीड़ित लोगों की काउंसिलिंग के लिए मनोविज्ञान के छात्रों को अपने से जोड़ रहे हैं।

मनोविज्ञान के छात्रों के लिए अस्पतालों व स्वास्थ्य सेवाओं में क्लीनिक साइकोलॉजिस्ट या काउंसलर के रूप में काम करने का भी एक बड़ा अवसर है। आज निजी और सरकारी दोनों तरह के अस्पतालों में काउंसलर नियुक्त होते हैं। मनोविज्ञान के कार्स को करने के उपरांत कॉलेज व विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान के छात्रों को अध्यापन करने का मौका मिलता है। मैनेजमेंट संस्थान बिजनेस कम्युनिकेशन व एच.आर. का विषय पढ़ाने के लिए मनोविज्ञान के छात्रों को अपने यहाँ रख रहे हैं। निजी कंपनियों के अलावा डीआरडीओ लैब में साइंटिस्ट बी ग्रेड में मनोविज्ञान के छात्रों की नियुक्ति होती है। इसके लिए जरूरी है कि आपके पास मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री हो। कॅरियर विकास कार्यक्रम में इस विषय के छात्रों को खूब इस्तेमाल किया जा रहा है। इन क्षेत्रों के अलावा स्नातक करने के बाद वे सारे अवसर भी खुले हैं, जो अन्य स्नातकों के लिए होते हैं। चाहे वह सिविल सेवा में जाने का मामला हो

बाल लेखनी : निलेश वैभव यादव

वीर बनूंगा

भारत माँ का वीर बनूंगा। साहसी निर्भय धीर बनूंगा।।
याद करूंगा भारत के लाल। बोस, भगत, आजाद, गोपाल।।
गंगा की निर्मल धाराएँ। हिमालय की चिर गाथाएँ।।
सोंधी माटी की महक। चूँ चूँ चिड़ियों की चहक।।
याद रखूंगा नित इनको। भाये जो सबके मन को।।
दुश्मनों की नहीं सहूँगा। भारत माँ का वीर बनूंगा।।

• लखराम (छ.ग.)

माँग में काफी इजाफा हुआ है। वैवाहिक संबंधों में आए दुराव को दूर करने, मनुष्यों की भावनात्मक परेशानियों व अन्य उलझनों को दूर करने में क्लीनिकल साइकोलॉजिस्ट की भूमिका से आज कोई भी अनजान नहीं है।

सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ साइकोलॉजी, कांकेरांची, में डिप्लोमा इन साइकोलॉजिकल मेडिसिन मेडिसिन एंड सोशल साइकोलॉजी, साइकोलॉजिकल सोशल वर्क पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं, जबकि नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंस, बैंगलूरु में क्लीनिकल साइकोलॉजी में पीएच.–डी. साइक्रेट्रिक नर्सिंग में डिप्लोमा पाठ्यक्रम की सुविधा है। इसके अलावा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ खड़गपुर गुजरात विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में कई तरह के मनोविज्ञान के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। आज इस विषय की माँग इस हद तक बढ़ चुकी है कि प्रतिष्ठित संस्थान से मनोविज्ञान का कोर्स पूरा करते ही प्लेसमेंट मिल जाता है। मनोविज्ञान की सामान्य शिक्षा के लिए अगर स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में उपलब्ध हैं और इसे कॅरियर के रूप में चुनना है तो विशिष्ट अध्ययन संस्थानों से डिग्री तथा डिप्लोमा के विशेष पाठ्यक्रम किए जा सकते हैं।

मनोविज्ञान का पाठ्यक्रम कराने वाले देश के प्रमुख विश्वविद्यालय/संस्थान हैं–

- बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल।
- देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर।
- डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।
- अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा।
- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंस, बैंगलुरु।
- टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई।
- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।
- लेडी श्रीराम कॉलेज, लाजपत नगर, नईदिल्ली।
- गार्गी कॉलेज, सिरीफोर्ट रोड़, नई दिल्ली।
- अखिल भारतीय शारीरिक औषधि एवं पुनर्स्थापन संस्थान, मुम्बई।
- भारतीय पुनर्वास परिषद, नई दिल्ली।
- रांची तंत्रिका मनोविकृति विज्ञान एवं समवर्गी विज्ञान संस्थान, रांची।

इसके अलावा भी देश के कई विश्वविद्यालयों में मनोविज्ञान के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

● इन्दौर(म.प्र.)

(लेखक देश के ख्यात कॅरियर मार्गदर्शक और कॅरियर दिशा मिशन के प्रणेता है।)

कविता बनाइए

नवम्बर २०१५

के चित्र हेतु चयनित कविता

सीख रही गुड़िया से गुड़िया
सिखा रही गुड़िया को गुड़िया
गुड़िया की गुड़िया है बढ़िया
ये भी बढ़िया वह भी बढ़िया

● दीक्षा बिरला, इन्दौर (म.प्र.)

संज्ञा

नाटक : डॉ. प्रेम भारती

पात्र परिचय
पत्रकार -एक तरुण
विशेषण संज्ञानंद -प्रौढ़
संज्ञानन्द जी की पुत्री -एक बालिका ८-९ वर्ष की
एक अन्य बालक

स्थान : (घर का बैठक कक्ष)

(संज्ञानन्द जी अपने बैठक कक्ष में बैठे हैं तभी एक पत्रकार उनके कक्ष में प्रवेश करता है और अपना परिचय पत्र देता है।)

पत्रकार – नमस्ते! संज्ञानन्द जी। मैं 'हिन्दी प्रचार–प्रसार' का पत्रकार हूँ। हिन्दी विषय पर आपसे कुछ चर्चा करना है। कहिए अनुमति है?

संज्ञानन्द – हाँ! हाँ! अनुमति है। हमारा पूरा परिवार हिन्दी भाषा की सेवा में लगा हुआ है। हिन्दी को अनुशासन में रखना हमारा धर्म है।

पत्रकार – संज्ञानन्द जी! हिन्दी का एक विशाल भूगोल है। हिन्दी भाषा प्रयोग क्षेत्र इस दृष्टि से विशाल है। अब तो राष्ट्र–भाषा से ऊपर उठकर अन्तर्राष्ट्रीय–स्तर पर भी इसने अपनी पहचान बनाई है। स्वाभाविक है कि इससे हिन्दी भाषा का एक नया रूप देखने को मिल रहा है और कई नए–नए शब्द भी हिन्दी में आ रहे हैं, जिसका प्रभाव व्याकरण परिवार के अनुशासन पर पड़ रहा है। संज्ञा शब्दों में भी बदलाव आया है। इसकी सभी को चिन्ता है। इस संबंध में आप क्या कहना चाहेंगे?

संज्ञानन्द – यह आपने ठीक कहा है। मैं देख रहा हूँ यह परिवर्तन समय से पहले ही हो रहा है। नई पीढ़ी ने व्यक्ति, वस्तु तथा स्थान के नाम तेजी बदलने का जैसे संकल्प ले लिया है। अब व्यक्ति राम कुमार शर्मा के स्थान पर आर. के. शर्मा कहलाना अधिक पसंद कर रहा है, जो रावण कुमार भी हो सकता है, राज कुमार भी। रामकुमार कहने से संस्कृति का बोध होता था, लेकिन आर. के. कहने से क्या बोध होता है, मैं नहीं जानता। कुछ इसी प्रकार का परिवर्तन स्थान के नाम से भी हुआ है। देखो प्रयाग को लोग अब इलाहाबाद के नाम से जानते हैं। काशी को बनारस के नाम से। यही बात वस्तुओं के बारे में है। अब असली घी की पहचान पीढ़ी भूलती जा रही है। डालडा घी को ही लोग असली घी समझते हैं। यही हाल मैं जाति वाचक नामों में भी देख रहा हूँ– गाय को काऊ कहा जाने लगा है। कुत्ता डॉग बन गया है। भाववाचक शब्दों की स्थिति तो और भी विचित्र है। गुण वाले शब्द कम बोले जाते हैं, दोष बताने वाले अधिक। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य के मन में दुर्गुण वाले भाव अधिक पनप रहे हैं, सद्गुण वाले कम।

पत्रकार – क्या आप यह कहना चाहते हैं कि व्यक्ति, जाति तथा भाव इन तीनों से आपकी जो एक विशिष्ट पहचान थी, वह धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है और इससे मनुष्य के अन्तःकरण में संस्कृति का क्षरण हो रहा है।

संज्ञानन्द– ठीक कहा आपने। और कितने प्रमाण दूँ। क्या आप नहीं देख रहे हैं कि अब व्यक्ति का नाम राम, कृष्ण नहीं पिंकु–चिंकु हो गया है। लड़कियाँ सीता, राधा के बदले अपने आप को हेमामालिनी, रागिनी कहलाना चाहती हैं। जातिवाचक में माता–पिता, मॉम–डैड हो गए हैं। शिक्षक–

टीचर बन गए हैं। पशु–पक्षियों के नाम अंग्रेजी में रखे जा रहे हैं। स्थानों में होटल, क्लब, स्टोर आदि शब्द सुनने को मिल रहे हैं। भाववाचक वहाँ तो स्थिति और भी विचित्र है। मनुष्य में मनुष्यता कम होती जा रही है। मीठा, मिठास खो रहा है। अपनों ने अपनापन खो दिया है। इस प्रकार प्राणी तथा वस्तुओं के अपने गुण, धर्म, दशा, कर्म और मनोभाव बदलते जा रहे हैं।

पत्रकार – लेकिन बात यहीं तक नहीं है। अब भौतिकता के बढ़ते प्रभाव ने दो प्रकार की संज्ञाओं को और जन्म दिया है। समूह वाचक और द्रव्यवाचक। क्या आपको इस संबंध में कोई जानकारी है?

संज्ञानन्द – हाँ! मुझे पता है। बारात समूह वाचक है क्योंकि विवाह में आने वाला समूह है वह। हिरणों का झुंड, डाकुओं का गिरोह, साधुओं की जमात, अनाज का ढेर, सेना की टुकड़ी, चाबियों का गुच्छा ये सभी समूह वाचक हैं और जो लोग पदार्थ या द्रव्य से प्रेम करने लगे हैं, उन्होंने द्रव्य वाचक शब्दों का अधिक प्रयोग करना शुरु कर दिया है। जैसे– लोहा, लंबा, ठोस, चौड़ी, पानी आदि। पहले ये दोनों प्रकार की संज्ञाएं जाति वाचक में ही शामिल थीं। अब उनमें भी जाति भेद होने लगे हैं। यह अच्छी बात नहीं है। इतना ही नहीं– एक दिन मैं भ्रमण को जा रहा था, तभी किसी ने पूछा– ''संज्ञानन्द जी, भ्रमण शब्द संज्ञा है क्या?'' मैंने कहा– हाँ! वे बोले– 'भ्रमण' न व्यक्ति है, न जाति, न भाव फिर यह संज्ञा कैसे?– ''मैंने कहा– यह तो भाव वाचक संज्ञा है। भाव वाचक संज्ञा में कुछ संज्ञाएं ऐसी हैं जो क्रिया से बनाई जाती हैं। लेकिन भ्रमण तो क्रिया से बनाया शब्द नहीं हैं।''

उन्होंने कहा–''आपको पता है यह क्रियार्थक संज्ञा है, एक नया भेद भी आपके परिवार में आया है।'' बोलो! तब मुझे पता चला कि संज्ञा के छः भेद हो गए हैं।

पत्रकार – संज्ञानन्द जी, कृपया यह बताइए कि क्या व्यक्ति वाचक जाति वाचक और भाव वाचक संज्ञाओं में आने वाले नाम परस्पर दल–बदल भी कर लेते हैं। ऐसे में तो यह जानना बड़ा कठिन होगा कि कौन सा शब्द किस प्रकार के भेद के साथ है।

संज्ञानन्द – यह गड़बड़ी भी मैं अनुभव कर रहा हूँ। राजनीति की तरह यह प्रवृत्ति भाषा में भी बढ़ रही है। इस प्रवृत्ति से भाषा का स्वरूप विकृत होता जा रहा है। आम आदमी ही नहीं लेखकगण भी भाषा के तत्त्व तथा उसकी प्रकृति को जाने बिना इसी आधार पर नए–नए शब्द गढ़ते जा रहे हैं।

पत्रकार – मेरा प्रश्न अभी अधूरा है। कुछ स्पष्ट कीजिए। दल–बदल पर प्रकाश डालिए।

संज्ञानन्द – हाँ! मैं बता दूं– आप जानते हैं 'पुरी' शब्द का अर्थ है ग्राम या नगर परन्तु अब इस शब्द का प्रयोग केवल जगन्नाथ धाम के लिए किया जाता है। यह जाति वाचक संज्ञा का व्यक्ति वाचक प्रयोग कहलाएगा जैसे– 'पुरी' पहले जातिवाचक शब्द था, जो एक वचन में प्रयोग होने से अब व्यक्ति वाचक हो गया है।

ठीक इस प्रयोग के विपरीत यदि कोई कहे– बस, तुम्हीं एक हरिश्चन्द्र हो, तो यहाँ हरिश्चन्द्र का प्रयोग व्यक्ति के स्थान पर जाति वाचक के रूप में हुआ है, क्योंकि हरिश्चन्द्र एक व्यक्ति है जो सत्यवादी के रूप में जाने जाते हैं, किन्तु उनका गुण यहाँ व्यक्तिवादी न होकर अनेक व्यक्तियों का बोध कराता है, इसलिए यह जाति वाचक हो गया है। एक वचन से बहुवचन बन गया है। यही इसकी पहचान है।

पत्रकार – समझा। इसीलिए कहा जाता है– देश में

अब आप भाव वाचक का भी एक उदाहरण देंगे?

संज्ञानन्द – भाव वाचक संज्ञाएं सदा एक वचन में रहती हैं। इनका बहुवचन करते ही ये जाति वाचक संज्ञाएं बन जाती है। जैसे–

आलस्य हमारा शत्रु है। (यहाँ आलस्य भाव वाचक है।)

आलसियों से दूर रहना चाहिए। (यहाँ आलसियों शब्द जाति वाचक है।)

एक और कसोटी ध्यान में रखो–

भाववाचक संज्ञाओं को देखा या छुआ नहीं जा सकता। इन्हें केवल अनुभव किया जा सकता है। आलसियों को देखा या छुआ जा सकता है, किन्तु आलस्य को नहीं।

(कुमारी विशेषण का प्रवेश)

विशेषण – नमस्ते पिताजी!

संज्ञानन्द – कहाँ से आ रही हो बेटी! मैं तुम्हारा परिचय इन पत्रकार महोदय से करवाता हूँ। ये मेरे विषय में कुछ जानना चाहते थे।

विशेषण – क्या चर्चा पूरी हो गई। मैं यहाँ यह बताने आई थी कि मैंने एक संस्था बनाई है, जो गरीबों की मदद करती है। पत्रकार महाशय को इस संबंध में अपने पत्र में यह समाचार अवश्य प्रकाशित करना चाहिए।

पत्रकार – अवश्य ! अवश्य ! (कुछ देर रुककर) मैं एक व्यक्ति को जानता हूँ, जो बहुत गरीब है। क्या आप उसकी सहायता करेंगी?

विशेषण – बहुत गरीब– यहाँ आपने **बहुत** शब्द कहकर मेरा संबंध उस व्यक्ति से खुद–ब–खुद जोड़ दिया है। जो गरीब है।

संज्ञानन्द – हाँ! बेटी तुमने एक अच्छी बात का स्मरण कराया। एक बात और ध्यान रखिए पत्रकार महोदय। यह बहुत कम लोग जानते हैं कि यदि विशेषण किसी जाति या वर्ग का बोध कराने लगे, तो वे जाति वाचक संज्ञा बन जाते हैं। जैसे– आपने कहा जो बहुत गरीब है। यहाँ बहुत शब्द गरीब का विशेषण है, किन्तु कुमारी विशेषण ने जो गरीबों शब्द का प्रयोग किया है, वह जाति सूचक संज्ञा है, क्योंकि इस शब्द के पहले किसी विशेषण का प्रयोग नहीं हुआ है। अतः यह शब्द सम्पूर्ण गरीब समाज का

आपकी पाती

बच्चों के लिए उपयोगिता की दृष्टि से आकलन करूं तो कहना होता है कि बाल पत्रिकाओं की भीड़ में देवपुत्र की पहचान एक श्रेष्ठ पत्रिका के रूप में कायम होती है। मैंने झटपट वार्षिक सदस्यता शुल्क भेज दिया और तब से सितम्बर एवं अक्टूबर अंक यथासमय प्राप्त हो गए हैं। बाल साहित्य के शलाका पुरुष पुण्यश्लोक राष्ट्रबंधु पर आधृत देवपुत्र का अक्टूबर का विशिष्ट अंक उनकी रचनाशीलता के विविध आयामों को उजागर करने की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण और संग्रहणीय बन गया है। मेरा आंतरिक साधुवाद स्वीकारें।

♦डॉ. राजेन्द्र पंजियार, भागलपुर (बिहार)

♦डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल', चम्पावत (उत्तराखण्ड)

देवपुत्र है बाल पत्रिका सबसे न्यारी,
बाल-वृद्ध सबको ही लगती है यह प्यारी।
इसे सदा पाते ही उर आनंद समाता,
लगता, टूट नहीं पाएगा इससे नाता।
ठीक समय पर मिलती है हर माह पत्रिका,
सदा जगाती है पढ़ने की चाह पत्रिका।
बाल पत्रिकाओं में इसने धाक जमायी,
सम्पादक जी को है शत-शत बार बधाई।
देवपुत्र परिवार स्वस्थ-सानन्द रहेगा,
यही प्रार्थना पाठक वर्ग निरन्तर देगा।

♦अभिलाषा शर्मा, अशोक नगर, (म.प्र.)

मैं कक्षा १०वीं की छात्रा हूँ। मुझे देवपुत्र बहुत अच्छी लगती है। इसमें प्रकाशित कविता, कहानी, चित्रकथा, चुटकुले आदि बहुत रोचक लगते है। देवपुत्र में प्रकाशित प्रांत परिचय मुझे बहुत पसंद है। इसमें कोई ज्ञानवर्धक बाते पढ़ने को मिलती है जिससें बच्चों का दिमाग विकसित होता है।

अप्रैल माह का गणितांक बहुत अच्छा लगा। १००दागरों की कहानी में बड़ा मजा आया। मुझे हर महीने देवपुत्र का इंतजार रहता है।

प्रतिनिधित्व कर रहा है।

पत्रकार – संज्ञानन्द जी! आपका बहुत समय लिया, धन्यवाद। कुमारी विशेषण ने भी इस चर्चा में भाग लिया, मुझे अच्छा लगा किन्तु चलते चलते एक प्रश्न और –

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। मौसम में भी परिवर्तन होता रहता है, किन्तु परिवर्तन आपके परिवार में भी होता आ रहा है, ऐसा क्यों? जैसे– लड़का जाता है। लड़की जाती है। लड़कियाँ जाती हैं। लड़कों ने मैच जीता।

इस प्रकार लड़का–लड़की, लड़कियों तथा लड़कों के चार प्रकार परिवर्तित रूप आपके परिवार में देखने को मिल रहे हैं। ऐसा क्यों?

संज्ञानन्द– इस संबंध में फिर कभी चर्चा करेंगे। लेकिन ध्यान रखो हिन्दी में भाषा–भाषी लोगों के लिए– लिंग, वचन और कारक संबंधी कुछ ऐसे नियम हमारे परिवार ने अवश्य बना रखे हैं, जिन्हें हम रटकर नहीं, सहज में ही प्रयोग में लाते हैं। इसलिए मेरे विचार में हमारी, इस विशेषता को रटकर याद नहीं रखा जा सकता है। अच्छा होगा, आप हिन्दी में बातचीत करें, हिन्दी में पुस्तकें पढ़ें और निरन्तर अभ्यास से लिंग वचन तथा कारक का शुद्ध प्रयोग करना सीखें। फिर आप स्वयं प्रसंगानुकूल परिवर्तन के इस रहस्य को स्वयं जानने लगेंगे। बस आज इतना ही।

(तभी एक बालक का प्रवेश)

बालक – संज्ञानन्द जी प्रणाम। (प्रणाम के पश्चात हल्की मुस्कान चेहरे पर उठती है।)

संज्ञानन्द – आशीर्वाद, बेटे कहो कैसे हो? मुस्करा क्यों रहे हो? क्या कोई खास बात है।

बालक – आपके आशीर्वाद से आनंद में हूँ। मैं मुस्करा इसलिए रहा हूँ कि कल गुरु जी ने कक्षा में पूछा– एक ऐसा वाक्य बनाओ जिसमें संज्ञा के तीनों भेद आ जाएं। पता है कोई भी वाक्य नहीं बना पाया। पर मैंने बना दिया।

संज्ञानन्द – शाबास! जरा सुनाना वह वाक्य।

बालक – सुनिए– सुनील गावस्कर क्रिकेट खेल के बेहतरीन खिलाड़ी हैं।

संज्ञानन्द – अच्छा! इसमें तीनों भेद कौन–कौन से हैं, बता सकोगे?

बालक – देखिए इस वाक्य में– सुनील गावस्कर व्यक्ति वाचक संज्ञा है, खिलाड़ी जाति वाचक और खेल भाव वाचक है। ठीक है न....अरे! मुझे विद्यालय जाना है। देर हो रही है।

(सभी हँसने लगते हैं। बालक तेजी से भाग जाता है।)

पत्रकार – बहुत–बहुत धन्यवाद! फिर मिलेंगे। आज की इस चर्चा के लिए आपका आभारी हूँ।

संज्ञानन्द – आभार तो तब मानूंगा, जब आपने जो सवाल उठाए हैं उस भाषा का सम्मान करते हुए समाचार पत्र में हमारी बातचीत को शुद्ध हिन्दी में प्रकाशित करेंगे। आप लोगों ने इस देश की भाषा को खिचड़ी भाषा बना दिया है। इससे हमारे संस्कार भी प्रभावित हो रहे हैं। धन्यवाद!

(तीनों मुस्कराते हैं।)

पटाक्षेप

●भोपाल (म.प्र.)

(लेखक देश के जाने माने शिक्षाविद् एवं भाषा शास्त्री है।)

विवेकानंद जयंती : १२ जनवरी

आओ अपने अंदर झाँकें

बच्चो! बालक नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद) के बचपन की कुछ छबियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं। क्या यह गुण हमारे जीवन में भी है?

सत्य की खोज

सभी प्राणियों से प्रेम

संस्कृति प्रेम

राष्ट्रचिंतन

निर्भयता योग साधना

संगीत साधना

दानशीलता

शारीरिक शिक्षा

विशेष सूचनाः

प्रिय पाठको! स्वामी विवेकानंद के १५० वें जयंती वर्ष पर प्रकाशित, स्वामी जी के जीवन पर आधारित सम्पूर्ण बहुरंगी चित्रकथा सारे भारत में लाखों पाठकों द्वारा पढ़ी एवं सराही गई।
यह 'चित्रकथा' आपकी माँग पर और भी उपलब्ध हो सकती है यदि आप ५०, १०० या इससे अधिक संख्या में उपहार/वितरण/विक्रय हेतु चाहते है तो कृपया १०रु. प्रति चित्रकथा की दर से देवपुत्र का अग्रिम शुल्क भेजिए। चित्रकथा अपेक्षित संख्या में डाक/ट्रांसपोर्ट से भेजी जा सकेगी।

- सम्पादक

अध्ययनशीलता

साहित्य साधना

जिज्ञासा

अध्यात्म चिंतन

ओढ़ली रजाई

कहानी : मनोहर चमोली 'मनु'

एक बिल में चींटी अपने बच्चों के साथ रहती थी। बसंत आया। चींटी के बच्चों ने कहा– ''माँ! हम कब तक अंधेरे में रहेंगे? हम अपनी आँखों से इस बिल के बाहर की दुनिया देखना चाहते हैं।'' चींटी ने डॉटते हुए कहा– ''चुप रहो। अभी तुम बच्चे हो। जब बड़े हो जाओगे, तब जाना।'' एक बच्चे ने पूछा–''माँ! हम बड़े कब होंगे?'' चींटी ने कहा– ''अभी सो जाओ।''

चींटी लोरी सुनाने लगी। बच्चे लोरी सुनकर सो गए। सुबह हुई। बच्चे जाग चुके थे। चींटी ने कहा– ''मैं तुम्हारे लिए कुछ खाने को लाती हूँ। जब तक मैं आ न जाऊँ, तुम सब भीतर ही रहना। बाहर मत निकलना।'' यह कहकर चींटी चली गई। एक बच्चे ने कहा– ''सब उठो। जल्दी से मुंह–हाथ धो लो। आज हम भी घर से बाहर जाएंगे।'' सब बच्चे खुशी–खुशी तैयार हो गए। बिल से बाहर आकर सब पंक्ति में चलने लगे।

''माँ की कहानी में दुनिया बहुत बड़ी होती है। असल में दुनिया कैसी है, आज पता चलेगा।'' एक बच्चा बोला। दूसरा बोला–''वाह! वाकई! दुनिया कितनी बड़ी है। हवा चल रही है। हरियाली ही हरियाली है।'' तभी तीसरा बच्चा चिल्लाया–''अरे! देखो ये क्या है? चिपचिपा है। लेकिन खुशबूदार है।'' बच्चो दौड़कर गए।

किसी ने घूर कर देखा। किसी ने छूकर देखा। एक बच्चे ने उसे चख लिया। बच्चे ने बताया–''अरे! ये तो गुड़ है। मीठा है। जरा ध्यान सें खाना। चिपक मत जाना।बच्चों ने गुड़ खाया। एक बोला–'' बड़ा मजा आया। सब आगे बढ़ने लगे। चलते चलते उन्हें धान का एक खेत मिला।

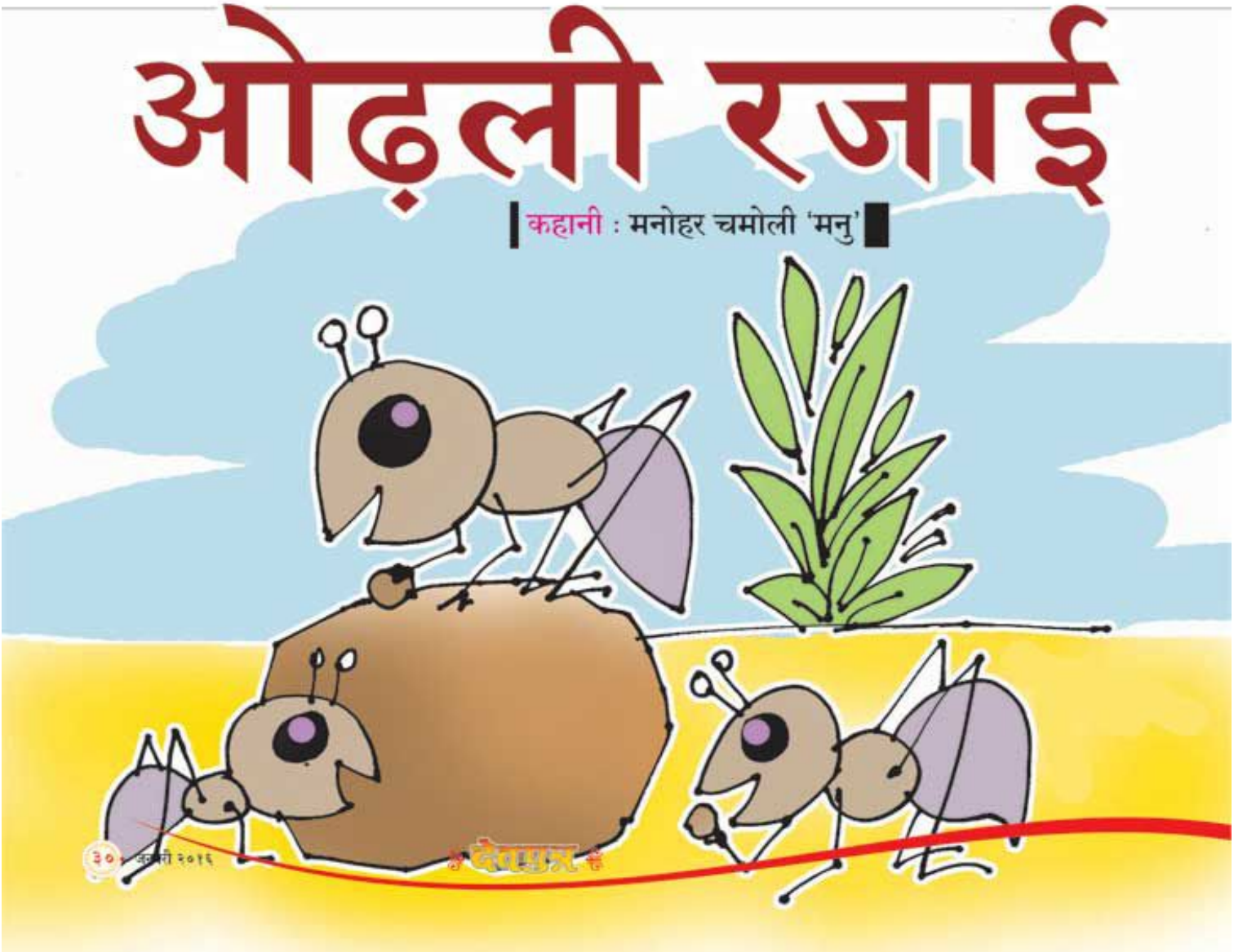

दूसरे बच्चे ने पूछा–''ये क्या है?'' तीसरे बच्चे ने जवाब दिया–'' चलो। नजदीक जाकर देखते हैं।'' धान की कुछ बालियाँ गिरी हुई थीं। बच्चे घूम–घूम कर टटोलने लगे। चौथा बच्चा बोला–''चलो इसका छिलका उतारते हैं।'' सबने मिलकर धान का छिलका उतार लिया। एक बच्चे ने कहा– ''अरे! ये तो चावल है। इसे खा सकते हैं।'' बच्चे धान के बीज तोड़ने लगे। सबने भर पेट चावल खाया।

दूसरा बोला– ''वाह! बड़ा मजा आया।'' वे आगे बढ़ गए। फिर उन्हें चीनी के कुछ दाने मिले। फिर उन्हें गेहूँ के बीज मिले। वह आगे बढ़े ही थे कि एक बच्चा फिर चिल्लाया– ''सब यहाँ आओ ये देखो। ये क्या है ?'' एक बीज डरा–सहमा हुआ था। बीज मिट्टी से लथ–पथ था। दूसरे बच्चे ने कहा– ''ये तो बीज है चलो इसका छिलका उतारते हैं। तभी किसी ने पुकारा– ''यह बीज मेरा है। इसे छोड़ दो।'' बच्चों ने नजर उठाकर देखा। आवाज कपास के एक बड़े पौधे से आई थी। तीसरे बच्चे ने पूछा– ''कौन हो तुम?''

पौधा बोला– ''मैं कपास हूँ। मैं भी कभी बीज था। आज देखो कितना बड़ा पौधा हूँ।'' अचानक आसमान में बादल छाने लगे। बिजली चमकने लगी। बादलों की गड़गड़ाहट से बच्चे डर गए। कपास का पौधा बोला– ''ओह! बादल घनघोर हैं। बारिश आने वाली है।'' एक बच्चे ने कहा– ''उफ! हम घर से बहुत आगे आ चुके हैं। अब क्या होगा?'' दूसरे ने कहा– ''हम बारिश में बह भी सकते हैं।'' कपास का पौधा बोला–''परेशानी की कोई बात नहीं। यहां चले आओ।''

पौधे में कपास के फूल खिल रहे थे। फूल रूई से भरे हुए थे। कपास का पौधा बोला–''डरो मत । मेरे फूलों की रुई नरम है। गरम है। आओ। इनके भीतर आ जाओ। जब बारिश रुक जाए, तब चले जाना।'' बच्चे खुश हो गए। सब ने जोर से कहा– ''धन्यवाद काका!'' बच्चों ने दौड़ लगाई। सब मुलायम रूई की रजाई ओढकर सो गए।

• पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

सही उत्तर

षट्भुजा

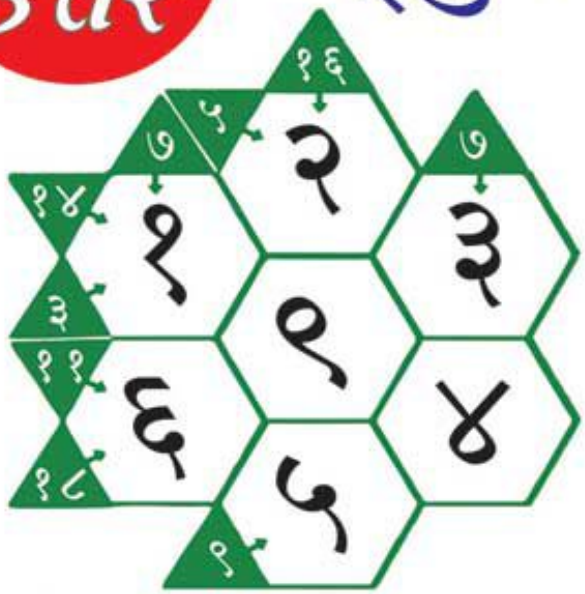

सही उत्तर

देवपुत्र प्रश्नमंच

१. शकुन्तला पुत्र भरत
२. चार
३. १४ सितम्बर, १९४९
४. ७ नवम्बर, १८७५
५. जनवरी, १९१२
६. २४ जनवरी, १९५०
७. १९६३
८. १९७३
९. सिंह
१०. सारनाथ

बिंदु मिलाओ–रंग भरो

राजेश गुजर

यहाँ कौन पतंग उड़ा रहा है, बिन्दुओं को मिलाकर रंग भरो।

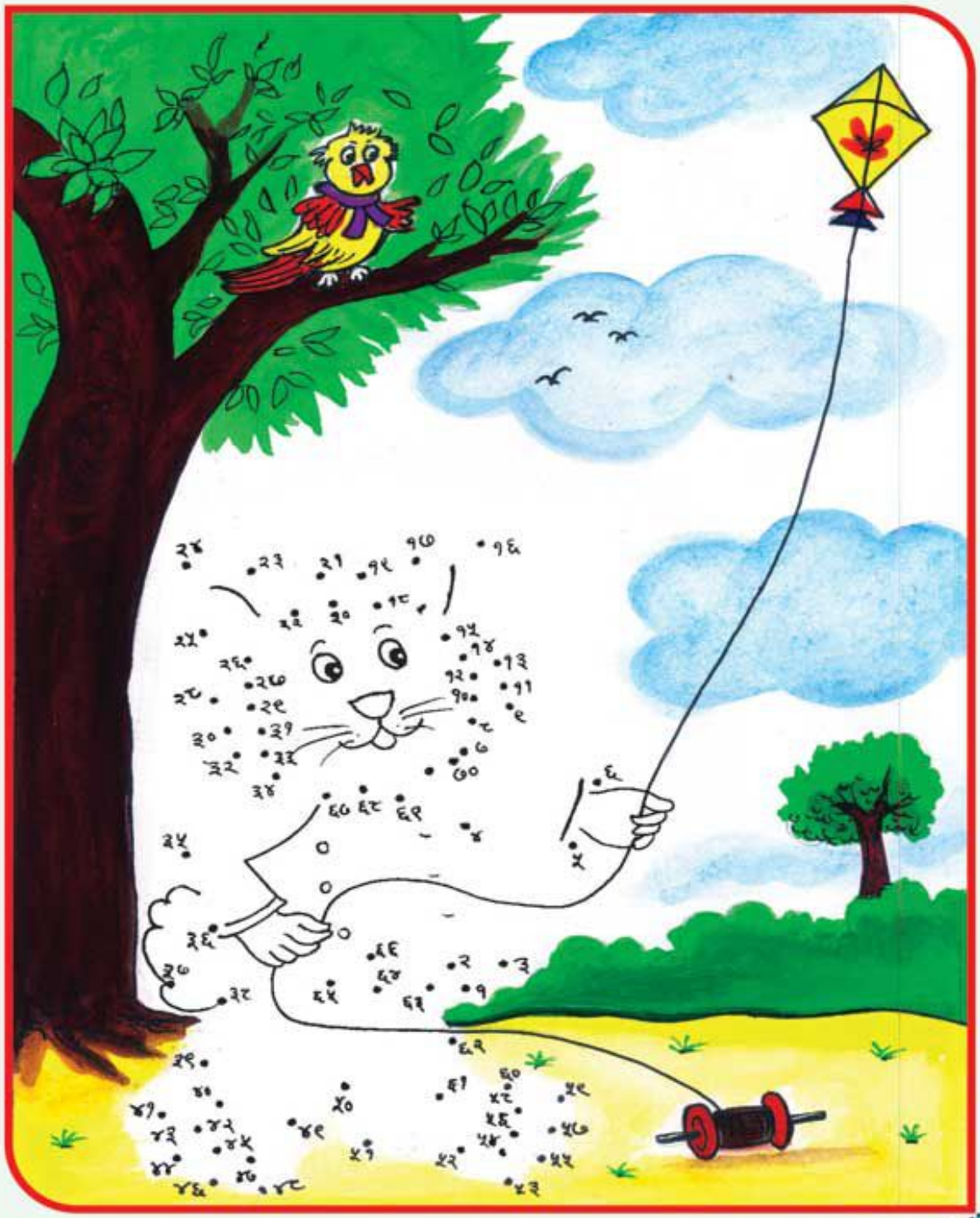

नई शुरुआत

कहानी : डॉ. लीला मोदी

पांच वर्षीय राघव ने नाचते हुए पूछा। ''पिताजी! काका की शादी है ना?''

''हाँ बेटा!''

पिताजी से लिपटते हुए पूछा ''घोड़ी पर मैं ही बैठूंगा ना?''

''हाँ और क्या? अरे तू ही तो सबसे छोटा है। मेरा लाड़ला।''

''पिताजी! आप भूल तो नहीं जाओगे?''

''अरे बिल्कुल नहीं बेटा! भला मैं तुझे भूल सकता हूँ।''

''भूले थे...भूले थे। आपकी शादी में। आपने मुझे घोड़ी पर नहीं बिठाया था।'' राघव बिसूरते हुए बोला। आपकी शादी में मेरा एक भी फोटो नहीं है।

सब एक साथ ठहाका लगाते हैं। दादा जी राघव को सीने से चिपटा लेते हैं। हँसते हैं।

''दादा जी, मेरे लिए भी सूट लाना।''

''हाँ रे छुटकू! सूट लाऊँगा। बूट लाऊँगा। साफा भी बंधवाऊँगा। सबसे पहले घोड़ी पर तुझे ही बैठाऊँगा।''

''पर मैं साफा नहीं बंधवाऊँगा। सूट बूट के साथ हैट लगाऊँगा। काकी को लाऊँगा। फिर हम क्या करेंगे?''

''फिर हम प्रीतिभोज करेंगे।''

''यह क्या होता है?''

''यह दावत होती है। मिठाईयाँ बनेंगी। नमकीन बनेंगे। बहुत से मेहमान आएंगे। जैसे हम जीमने चलते हैं ना। वैसे ही अब लोग अपने यहाँ जीमने आएंगे।''

राघव ने घबरा कर कहा। ''दादाजी! वे लोग जूठन छोड़ेंगे? जैसे सबके यहाँ छोड़ते हैं। बुराई भी करेंगे। वह मेरा मित्र है ना मोटू। खाता तो है

ही ज्यादा। पर बिगाड़ता उससे भी ज्यादा है। वो भोज में तीन–चार थालियाँ बदलता है। भरी की भरी छोड़ देता है। कहता है खाना अच्छा नहीं बना हैं। पर मैं जूठन नहीं छोड़ता। क्योंकि आप ने बताया था। अन्न भी देवता है। अगर हम खाने को छोड़ते हैं तो...भगवान पाप देते हैं ना?''

''हाँ बेटा!''

''तो हम प्रीतिभोज नहीं करेंगे।''

''क्यूं? प्रीतिभोज तो करना पड़ेगा। इस तरह हम अपनी खुशी लोगों में बाँटते हैं।''

''हम खाना गरीबों को बॉटेंगे। वो तो जूठन नहीं छोड़ते ना? खाने की बुराई भी नहीं करेंगे ना?''

दादाजी ठंडी साँस खींचकर बोले ''अरे बेटा! उन्हें तो अच्छा भोजन देखना भी भाग्य में नहीं होता।''

''क्यूं? उनके पास पैसे नहीं होते क्या? प्रीतिभोज में कितने पैसे लगेंगे? दो रुपए?''

''अरे नहीं रे बेटा! बहुत से।''

''बहुत से कितने... पाँच रुपए।''

दादाजी हँसते हैं। ''शादी में दो पाँच रूपए से क्या होता है।''

''तो सौ रूपए लगेंगे क्या?''

''अरे सौ, दो सौ क्या.... लाखों रुपए लगेंगे।''

''लाखों कितने सारे होते हैं? इतने पैसे आते कहाँ से है?''

''बेटा! इन पैसों को जोड़ने में सालों लग जाते हैं। बहुत मेहनत का पैसा होता है।''

''छिः लोग मेहनत के पैसे जूठन में छोड़ते हैं। बुराई और कर जाते हैं। हम गरीबों को ही भोजन कराएंगे।''

बच्चे की बात दिल में घर कर गई। दादाजी और पिता को गरीबी के दिन याद आ गए। एक नया विचार कौंधा।

काकी घर आ गई हैं। अनोखी पंगत हुई। भोजन गरीब बस्ती में बाँटा गया। पत्तल में जूठन का एक भी दाना नहीं था। आशीर्वाद की बरसात हो रही है। अन्नदेवता मुस्कुरा रहे हैं। मेरा इतना सम्मान!

● टिपटा (राज.)

पाँच पहेलियाँ

कृष्ण कुमार मिश्र 'अचूक'

आजादी की लड़ी लड़ाई।
अपनी फौज सजाई।।
हुआ अदृश्य पर अंग्रेजों ने
छाया तक न पाई।।

किसने घड़ी कमर पर बाँधी
हाथ लकुटिया धारी
आजादी के आन्दोलन की
पीछे भीड़ थी भारी।।

तीन अक्षर का नाम हमारा।
पिता सिन्धु है मेरा।।
प्रथम कटे गन्दा हो जाता।
मध्य कटे कल फेरा।।

शेर के दाँत कौन गिनता था।
मात-पिता का दुलारा।।
उसके नाम से देश का अपने
नाम पड़ा अति प्यारा।।

जय जवान और जय किसान यह
था किसका प्यारा नारा।।
ताशकन्द ने छीन लिया।
भारत का पी.एम. प्यारा।।

● शाहजहाँपुर (उ.प्र.)

(उत्तर इसी अंक में)

(पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्मशती वर्ष)

सेवाभावी दीना

डॉ. वेदमित्र शुक्ला 'मयंक'

दीना के मामा जी को
जब हुआ तपेदिक रोग,
तब बीमारी देख भागते
पास आते न लोग।
उन्हें चिकित्सा हेतु लखनऊ
शहर पड़ा ले जाना,
साथ कौन जाएगा बच्चो
मुश्किल था कह पाना।
नन्हें बालक दीना ने तब
खुद ही मन में ठाना,
मामा जी की सेवा में अब
साथ हैं उसको जाना।
तनिक नहीं घबराए दीना
बीमारी थी भारी,
साथ गया नन्हा सा दीना
सेवा कर दी जारी।
ये दीना था और न कोई
पण्डित दीनदयाल,
बच्चो ! सेवा-भाव था उनमें
वो हैं एक मिसाल।

● नई दिल्ली

नेताजी सुभाष

कविता: सूर्यप्रकाश अग्रवाल

जागो जागो भारतवासी
धरती माँ का हक मैं लूंगा
तुम बस केवल मुझे खून दो
मैं तुमको आजादी दूँगा।।
सोचा कब था अंजाम हुआ
अपना क्यूँ देश गुलाम हुआ
जह नारा जय हिन्द आम हुआ
देखो दुश्मन नाकाम हुआ
मत घबराओ हिम्मत रक्खो
अंग्रेजों से खूब लड़ूंगा
आजाद हिन्द यह फौज बनाई
अंग्रेजों को धूल चटाई
जगह-जगह जो करें बुराई
आजादी ने ली अंगड़ाई
अंग्रेजो अब भारत छोड़ो
मैं अब पीछे नहीं हटूंगा।।
पर्वत में हम राह बनाएँ
बस कर्मठता को अपनाएँ
घर-घर अपने दीप जलाएँ
आजादी का जश्न मनाएँ
तुम ये बातें याद रखो
मैं साहस के साथ रहूँगा।।

● भोपाल (म.प्र.)

वीआईपी पास

चित्रकथा - देवांशु वत्स

कौन है छोटे से बड़ा?

एक रूप है एक ही रंग
किससे बड़ी है कौनसी पतंग

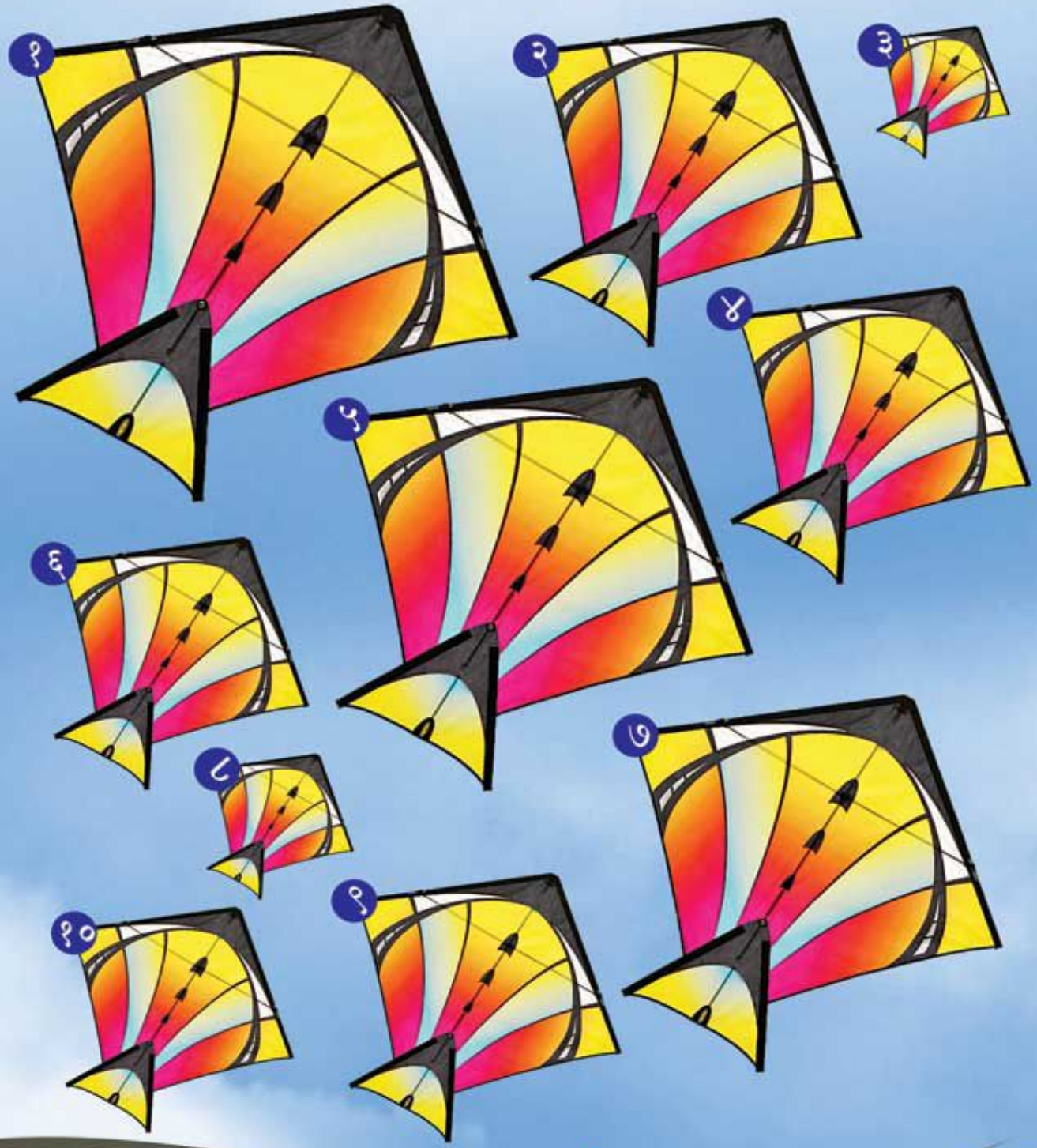

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

परखो अपना ज्ञान

(क) यदि आप भारत के राष्ट्रपति बनना चाहते हैं तो आपकी आयु कम से कम कितनी होनी चाहिए?
(१) ६० वर्ष (२) १८ वर्ष (३) ३५ वर्ष

(ख) राष्ट्रपति को पद एवं गोपनीयता की शपथ कौन दिलाते हैं?
(१) लोकसभा अध्यक्ष
(२) उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश
(३) तीनों सेनाओं के सेनाध्यक्ष

(ग) भारत की सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति कौन होता है।
(१) राष्ट्रपति (२) गृहमंत्री (३) थल सेनाध्यक्ष

(घ) उपराष्ट्रपति को शपथ कौन दिलाते हैं?
(१) प्रधानमंत्री
(२) सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश
(३) राष्ट्रपति

(ङ) राज्यसभा का सभापति कौन होता है?
(१) राष्ट्रपति (२) उपराष्ट्रपति (३) प्रधानमंत्री

(च) राज्यों में राष्ट्रपति का प्रतिनिधि कौन होता है?
(१) महापौर (२) राज्यपाल (३) मुख्यमंत्री

(छ) राज्यसभा सदस्य बनने के लिए कम से कम आयु क्या है?
(१) १८ वर्ष (२) २१ वर्ष (३) ३० वर्ष

(ज) लोकसभा सदस्य बनने हेतु कम से कम अनिवार्य आयु कितनी होना चाहिए?
(१) २१ वर्ष (२) २५ वर्ष (३) १६ वर्ष

(झ) लोकसभा सदस्य चुनने हेतु किसी भी नागरिक की न्यूनतम आयु कितनी होनी चाहिए?
(१) १८ वर्ष (२) २१ वर्ष (३) १६ वर्ष

(ञ) भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश किस आयु तक पद पर रह सकते हैं?
(१) ४० वर्ष (२) अनिश्चित (३) ६५ वर्ष

(उत्तर इसी अंक में)

चुटकुले

अभिलाषा शर्मा
अशोक नगर (म.प्र.)

एक मित्र ने पप्पू से एक सवाल पूछा।
मित्र - अगर तुम्हारा मित्र बल्लू १० प्रतिशत के हिसाब से मुझसे ५०,००० रु. का कर्ज लेते है तो बताओ एक वर्ष बाद वह कितना पैसा वापस करेगा?
पप्पू - एक भी नही।
मित्र - तुम गणित नहीं जानते क्या?
पप्पू - मित्र, मैं तो गणित जानता हूँ, पर आप बल्लू को नहीं जानते।

तीन आदमियों ने भगवान से वरदान माँगा।
पहला - मुझे सोने-चाँदी से भरा एक कमरा दे दो।
दूसरा - मुझे हीरे-पन्ने से भरा एक कमरा दे दो।
तीसरा - मुझे इन दोनों के कमरे की चाबी दे दो।

डाक्टर पप्पू से- आपका वजन कितना है?
पप्पू - चश्में के साथ ७५ किलो
डाक्टर - और चश्में के बगैर
पप्पू - दिखता ही नहीं।

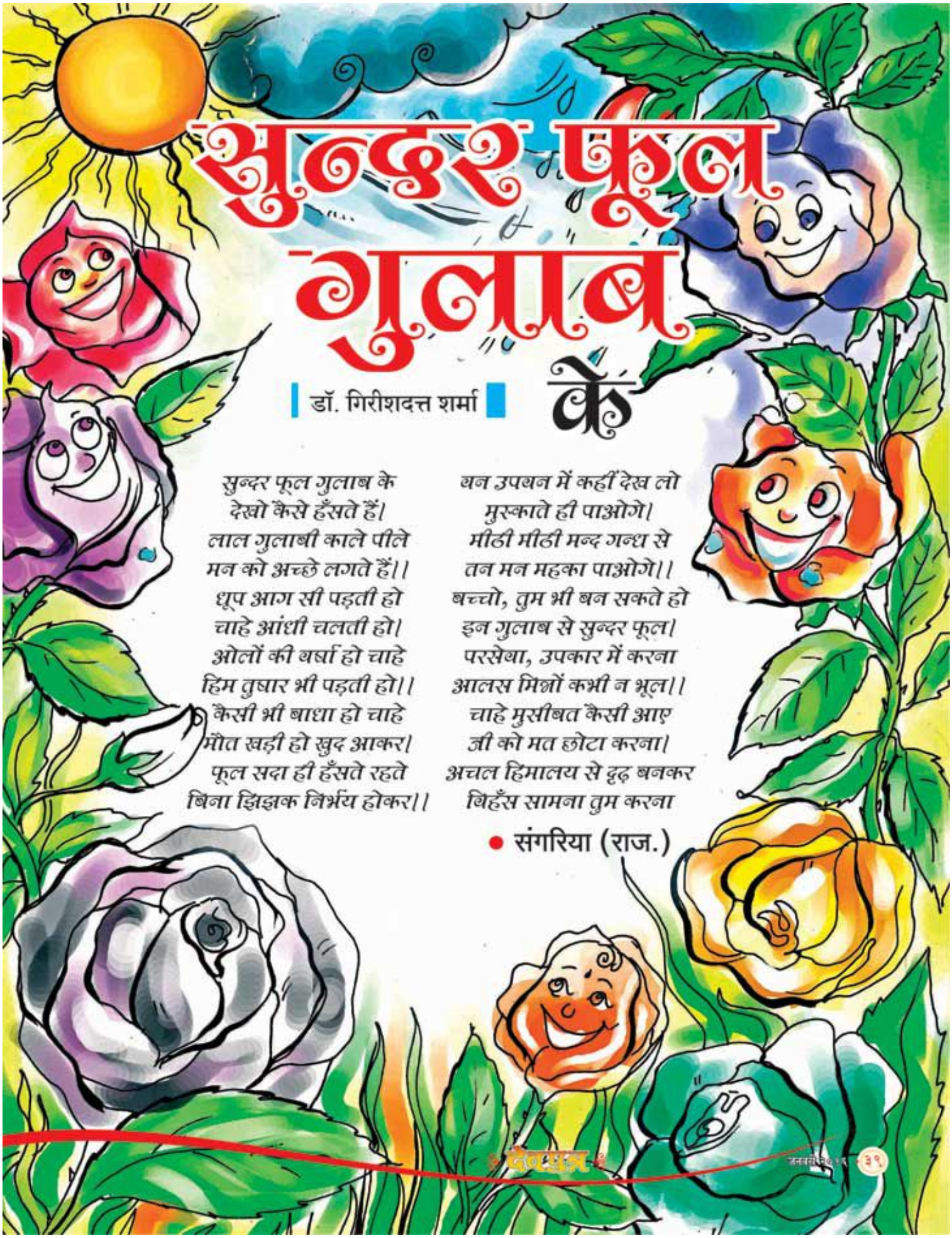

सुन्दर फूल गुलाब के

डॉ. गिरीशदत्त शर्मा

सुन्दर फूल गुलाब के
देखो कैसे हँसते हैं।
लाल गुलाबी काले पीले
मन को अच्छे लगते हैं।।
धूप आग सी पड़ती हो
चाहे आंधी चलती हो।
ओलों की वर्षा हो चाहे
हिम तुषार भी पड़ती हो।।
कैसी भी बाधा हो चाहे
मौत खड़ी हो खुद आकर।
फूल सदा ही हँसते रहते
बिना झिझक निर्भय होकर।।

वन उपवन में कहीं देख लो
मुस्काते ही पाओगे।
मीठी मीठी मन्द गन्ध से
तन मन महका पाओगे।।
बच्चो, तुम भी बन सकते हो
इन गुलाब से सुन्दर फूल।
परसेवा, उपकार में करना
आलस मित्रों कभी न भूल।।
चाहे मुसीबत कैसी आए
जी को मत छोटा करना।
अचल हिमालय से दृढ़ बनकर
विहँस सामना तुम करना

• संगरिया (राज.)

जीवन शैली

गणतंत्र दिवस 'संविधान' को समझने की प्रेरणा देता है

प्रो. नन्दकिशोर मालानी

हमारे राष्ट्रीय पर्वों में २६ जनवरी अर्थात् 'गणतंत्र दिवस' सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। वह सबसे न्यारा और प्यारा दिन है। जब भारत के साथ पूरी मानव जाति के इतिहास ने भी नई करवट बदली १५ अगस्त १९४७ को और २६ जनवरी १९५० को अपना पवित्र संविधान अपनाया।

भारत केवल एक भौगोलिक क्षेत्र का नाम नहीं है। वह विश्व की प्राचीनतम सभ्यता की जन्मभूमि है। दुनिया का एकमात्र देश है , जिसने हजारों वर्षों की उथल–पुथल के बीच अपनी अनूठी परम्पराओं को बनाए रखा है। हमारे लम्बे इतिहास में पराधीनता की घोर पीड़ा की कटु स्मृतियाँ भी हैं और मानव को सभ्यता, भाषा, ज्ञान, धर्म, संस्कृति, प्रेरक मूल्यों, कला, विज्ञान और व्यवहार सिखाने के उजले अध्याय भी हैं। क्या दुनिया में कोई भी ऐसा देश, धर्म और संस्कृति है जो यह सिद्ध कर सके कि वह भारत का कर्जदार नहीं हैं?

बहुत लम्बी और घोर तपस्या के बाद २६ जनवरी १९५० का दिन हमारे इतिहास में जुड़ सका जब हमने स्वयं के सार्वभौम, संघीय, लोकतान्त्रिक, संसदीय गणतंत्र होने की महान घोषणा की और पंथनिरपेक्षता का मार्ग अपनाया। सैकड़ों वर्षों की धूल–गर्द को झाड़कर हम एक महान और विलक्षण राष्ट्र के रूप में संसार का सांस्कृतिक नेतृत्व करने की दिशा में चल पड़े। आज भारत ने सिंह गर्जना की है कि संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् में उसे स्थाई सदस्यता मिलनी ही चाहिए।

जैसे पर्वतों में हिमालय है वैसे ही दुनिया के सभी संविधानों के बीच भारतीय संविधान का स्थान है। वह एक संविधान सभा के द्वारा बनाया गया है सबसे ज्यादा लम्बा है और लोचदार भी। आवश्यकता के अनुसार उसमें अभी तक लगभग एक सौ संशोधन किए जा चुके हैं। २६ नवम्बर १९४९ को उसे पारित किया गया था और ठीक दो माह बाद उसे लागू कर दिया गया। संविधान निर्माण में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका उन डॉ. भीमराव अम्बेडकर को दी गई जिन्हें बचपन में जातीय भेदभाव का शिकार होना पड़ा था। इससे यह भी सिद्ध होता है कि **हमारे समाज में अपनी ही कमजोरी को दूर कर सकने की विलक्षण क्षमता भी है।** इसको आगे बढ़ाँए।

भारतीय संविधान ने अपने नागरिकों को वे अधिकार दिए जिनके लिए दुनिया के दूसरे देशों में लोगों को भीषण संघर्ष करने पड़े थे। **भारतीय संविधान की प्रस्तावना उसकी आत्मा को समझने की कुंजी है।** उसमें अवसरों की समानता, सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय, पंथ और पूजा की स्वतंत्रता, विचारों की अभिव्यक्ति, व्यक्तिगत सम्मान और राष्ट्र की एकता के साथ बन्धुत्व भावना बढ़ाने का पवित्र संकल्प है।

भारतीय संविधान के प्रावधानों में हमारी संस्कृति की गहरी छाप है। वह अनूठे मौलिक अधिकार देता है और राष्ट्रीय कर्तव्यों के पालन की गहरी माँग भी करता है। **अधिकार के अंकुर की सिंचाई कर्तव्य के पानी से की जानी चाहिए।**

लागू करते समय भारतीय संविधान में २२ भाग, ३९५ अनुच्छेद तथा ८ अनुसूचियाँ शामिल थीं। एक–एक अनुच्छेद पर लम्बी चौड़ी बहस हुई थी। यही कारण था कि उसकी रचना में तीन वर्षों का समय लगा था। हमारी संविधान सभा में समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधि मौजूद थे। व्यस्क मताधिकार, नर–

नारी समानता और स्वतन्त्र न्याय पालिका हमारे संविधान की कुछ प्रमुख विशेषताएं हैं। उसमें ऐसे नीति निर्देशक सिद्धान्त भी हैं जिन्हें न्यायालय के आदेश से लागू तो नहीं करवाया जा सकता है लेकिन केन्द्र और राज्य सरकारों के लिए वे प्रकाश स्तम्भ का कार्य करते हैं। समान नागरिक संहिता, गोरक्षा, शराब बन्दी आदि कुछ उदाहरण हैं।

हमारा संविधान भारत का सर्वोपरि राष्ट्रीय ग्रंथ है। उसकी मूल भावना को अपने व्यवहार और चरित्र में अपनाना हमारा पवित्र कर्तव्य है। चीन और पाकिस्तान जैसे हमारे पड़ोसी राष्ट्र क्या उन महान सिद्धांतों को अपनाने की दूर-दूर तक कल्पना भी कर सकते हैं जिनकी अटल आधार शिला पर हमारा संविधान खड़ा हुआ है?

हमारी संस्कृति में सहिष्णुता, न्याय और लोच के गुण कूट-कूट कर भरे हुए हैं। लोकतंत्र हमारी मिट्टी से गहरा जुड़ाव रखता है। प्राचीनतम भारत में गणराज्यों एवं पंचायतों के ढेरों उदारहण मिलते हैं। हम पर असहिष्णुता का आरोप लगाना वैसा ही है जैसे चलनी यह शिकायत करे कि सुई के पैंदे में एक छेद है। हम सदैव असहमति को आदर देते आए हैं।

संविधान शब्द का आशय है, ऐसे बुनियादी सिद्धांतों और नियमों का कथन जो किसी भी राजनीतिक, सांस्कृतिक अथवा सामाजिक संस्था के गठन की आधारशिला होते हैं।

पिछले दिनों फ्रांस की रंगीन राजधानी पेरिस में हुई दो बातों ने पूरे संसार का ध्यान आकर्षित किया- एक तो जिहादी आतंकवादियों का भीषण आक्रमण और दूसरा जलवायु परिवर्तन पर विचार करने के लिए हुआ विश्व के सभी राष्ट्रों का सम्मेलन।

इन दोनों का सम्बन्ध पूरी मनुष्य जाति के भविष्य से है। इनका संबंध उस दिव्य संविधान के उल्लंघन से भी है जो परमपिता परमात्मा ने बनाया है और प्रकृति के कण-कण में समाया हुआ है।

आज जिहादी आतंकवाद मानव जाति के अस्तित्व और वैविध्य के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया है। अपनी कल्पना के स्वर्ग की प्राप्ति के लिए वह इस प्यारी वसुन्धरा को नर्क बनाने पर तुला हुआ है। आतंकवादी ऐसे गुमराह लोग हैं जो खुद को भी मानव बम बना लेता हैं और यह मानते हैं कि वे जन्नत हासिल करने की कीमत चुका रहे हैं। पश्चिम के वे देश जो अभी तक प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जिहादी आतंकवाद की जड़ों में पानी दे रहे थे अब उसके विस्तार व भस्मासुरी प्रहार से काँप उठे हैं। भारतीय संविधान के प्रहरियों को भी उसका मुकाबला करने के लिए सजग और प्रखर बनना होगा।

पृथ्वी के तापमान में वृद्धि, जलवायु परिवर्तन, वातावरण प्रदूषण अंधे लोभ की कोख से पैदा हुए हैं। उपभोगवाद भट्टी में अमूल्य प्राकृतिक संसाधनों को झोंक रहे हैं। हमारी जीवन शैली प्रकृति के दिव्य संविधान पर एक खुला आक्रमण है। जो **सभ्यता अपने जंगलों को उजाड़ देती है उसके नगर और नागरिक सुरक्षित नहीं रह सकते। नदियों को गन्दा करना अपनी मौत को बुलाना है।**

महान भारतीय शास्त्रों की बातों को नकार भी दें तो अब नासा की उन खोजों से हम कैसे आँखें मूंद लें जो यह कहती है कि इस ब्रह्माण्ड में १९ अरब निहारिकाएँ (Galaxies) हैं। सोम्ब्रेरों नामक निहारिका में ८०० अरब सूर्य हैं। हमारी आकाशगंगा जैसी निहारिका भी अति विशाल है जो अपनी गोद के बड़े सूक्ष्म हिस्से में हमारी प्यारी वसुन्धरा को धारण किए हुए है। उसको सूरज का वरदान प्राप्त है।

विज्ञान कहने लगा है कि हमारे ब्रह्माण्ड के अलावा और भी अगणित ब्रह्माण्डों के होने की संभावना है।

कहने का आशय यह है कि पूरी सृष्टि के रचनाकार ने भी अपना कोई दिव्य संविधान तो बना ही रखा होगा। उस महाकालेश्वर और महादेशेश्वर की मंशा हमारे अन्तःकरण में मुदिता, करुणा, मैत्री, प्रेम आदि के रूप में प्रकट होती है। हम उसकी अनसुनी न करें। नैतिकता, पुण्य और पाप की बातों को पिछड़ापन न मानें। **प्रकृति की पुकार की ओर ध्यान नहीं देंगे तो उससे प्रहार से नष्ट हो जाएँगे।**

'प्रकृति पर विजय' की मूर्खता को छोड़कर उसके आदेशों को समझें और उनका पालन करें। निरीह वनस्पतियों, पशु-पक्षियों और प्राणियों की बलि न देकर अपनी पशुता का त्याग करें।

जो कुछ ब्रह्माण्ड में है उसका सार अंश हमारे दिव्य पिण्ड अर्थात शरीर में भी है। इस शरीर के स्वास्थ्य से लेकर पूरी सृष्टि के सृजन, पालन और प्रलय के कुछ अटल नियम है। सृष्टिकर्ता का अपना संविधान है। राष्ट्रों के संविधान तभी बचेंगे जब वे इसके अधीन रहेंगे। जो इस सृष्टि की लय के साथ चलेगा वही बचेगा। हमारा देश इस लय को समझता है।

● **इन्दौर**
(लेखक देश के ख्यात चिंतक, विचारक और व्यक्तित्व विकास विशेषज्ञ है।)

रोचक जानकारी :

क्या ? आप जानते है

भारत के सर्वोच्च न्यायालय के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश श्री टी.एस. ठाकुर। इनका कार्यकाल १ दिसम्बर २०१५ से आरंभ हुआ है।

भारत की वर्तमान लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन। इनका कार्यकाल ६ जून २०१४ से आरंभ हुआ।

भारत के वर्तमान मुख्य चुनाव आयुक्त श्री नसीम जैदी। इनका कार्यकाल१९. अप्रैल २०१५ से आरम्भ हुआ है।

भारत के उच्चतम न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायधीश का नाम था श्री हरिलाल जे. कानिया। इनका कार्यकाल २६ जनवरी १९५० से ६ नवम्बर १९५१ तक रहा।

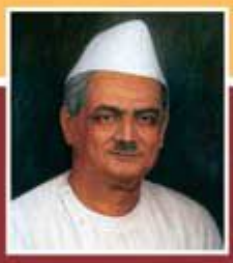

भारत के प्रथम लोकसभा अध्यक्ष का नाम था- श्री गणेश वासुदेव मावलंकर। इनका कार्यकाल १५ मई १९५२ से २७ फरवरी १९५६ तक रहा।

भारत के प्रथम मुख्य चुनाव आयुक्त थे श्री सुकुमार जैन। इनका कार्यकाल १९५० से १९५८ तक रहा।

हमारे राज्य पुष्प

असम का राज्य पुष्पः लोमड़ी पुच्छ आर्किड

डॉ. परशुराम शुक्ल

फूल एशिया का यह सुन्दर,
भारत में मिलता है।
थाई लंका सिंगापुर में,
कहीं कहीं खिलता है।
नेफा के जंगल में छोटा,
पौधा पाया जाता।
उगता अपने आप कहीं यह,
कहीं उगाया जाता।
मई जून में आते इस पर,
फूल धवल मतवाले।
छोटी-छोटी देख चित्तियाँ,
लगते बड़े निराले।
नाजुक इतने सर्दी गर्मी,
झेल नहीं कुछ पाते।
मौसम कोई भी हो इनको,
पालनहार बचाते।
वांडा से मिलकर अति सुन्दर,
संकर फूल बनाता।
मोहक छटा दिखाकर अपनी,
जग में नाम कमाता।

• भोपाल (म.प्र.)

सही उत्तर

परखो अपना ज्ञान

क. ३ च. २
ख. २ छ. ३
ग. १ ज. २
घ. ३ झ. १
ङ. २ ञ. ३

सही उत्तर

कौन किससे बड़ा

३, ८,
१०, ६,
९, ४,
२, ७,
५, १

बाल लेखनी : अलिशा सक्सेना

मेरी चिड़िया बुंदकी

उस दिन मैं सुबह सोकर उठी तो मैंने देखा मेरी छज्जे (बालकनी) में एक चिड़िया चहचहा रही थी। चिरर चिरर मैंने जाकर देखता तो वो एक नीले रंग की चिड़िया थी। जिसके एक पंख पर एक बुंदकी थी सफेद रंग की। मैं जल्दी दौड़कर अन्दर गई और एक कटोरी में पानी लाकर रख दिया और थोड़े से चावल के दाने भी डालकर परदे के पीछे छिप गई। मैंने देखा उसने थोड़े से दाने खाए, पानी पिया और उड़ गई। बस फिर क्या था वह रोज आती और पानी दाना खाती थोड़ी देर बालकनी में फुदकती और उड़ जाती। उसके पंख पर बुंदकी होने के कारण मैने उसका नाम बुंदकी रख दिया था। बुंदकी सुबह जल्दी आती थी। इसलिए मैं भी सुबह जल्दी उठने लगी। मैंने आज सुबह से दाना पानी रखा पर बुंदकी का कहीं भी नामोनिशान नहीं था। मैं उदास हो गई। दिनभर मेरा कही मन नहीं लग रहा था। शाम को मैं बगीचे में खेल रही थी तो जब मैं अपनी गेंद उठा रही थी तो पास में मुझे एक चिड़िया मरी हुई दिखी। मेरा दिल जोर से धड़कने लगा कहीं ये बुंदकी तो नहीं? मैंने उसके पास जाकर देखा पंख पर बुंदकी देखना चाही पर मुझे अंधेरा होने के कारण कुछ नहीं दिखा और भारी मन से घर आ गई और खाना खाकर सो गई।

चिरर चिरर चिरर इस आवाज ने मुझे जगा दिया मैं दौड़कर बालकनी में गई वहां बुंदकी फुदक फुदक कर शोर मचा रही थी। मैं उसे देखकर खुश हो गई। मैंने झटपट उसके लिए दाना पानी रखा उसने उसे खाया और आकाश में उड़ गई। मैं समझ गई शायद झाड़ी वाली चिड़िया धूप, भूख या प्यास से मरी होगी। काश! वह भी न मरती।

● अहमदाबाद (गुज.)

रंग भरो

चांद मो. घोसी

हमने यहां अपने नन्हे मित्रों के लिए एक चित्र दिया है जो श्वेत-श्याम होने के कारण नीरस लगता है, तो नन्हे मित्रों देर किस बात की, उठाएं अपने रंग तथा ब्रश और बना दें इस चित्र को रंगीन।

कहानी : सुरेन्द्र 'अंचल'

विश्वासघात बुरी बात

बहुत वर्षों पहले की बात है। चांपानेर नगरी पर प्रताप सिंह चौहान राज करता था। राजा प्रताप सिंह था भी बड़ा प्रतापी। राजस्थान का लोक गाथाओं में वह 'पताई रावल' के नाम से जाना जाता है।

राजा प्रताप सिंह का एक साला था। उसका नाम 'सइयां–बांकलियां' था। राजा ने उसकी वीरता और चतुराई से प्रसन्न होकर उसे किलेदार बना दिया था। संबंध में साला होने के कारण भी पताई–रावल का उस पर स्नेह और विश्वास था। सइयां–बाकलिया अपने आप को किसी राजा से कम नहीं समझता था। प्रताप सिंह के कोई संतान नहीं थी, इसलिए सइयां–बाकलियां अपने आप को ही राज्य का उत्तराधिकारी समझता था।

उन्हीं दिनों गुजरात पर महमूद बेग का अधिकार था। लोक–कथाओं में यह बेगड़ा–मेहमूद के नाम से प्रसिद्ध है। बादशाह बेगड़ा–महमूद चांपानेर को अपने अधिकार में करना चाहता है। उसने प्रताप सिंह चौहान को कई प्रलोभन दिए किन्तु स्वाभिमानी आदमी कभी लोभ में नहीं पड़ता।

बादशाह ने मौका पाकर चांपानेर पर आक्रमण कर दिया। घमासान युद्ध हुआ। कहते हैं कि बारह वर्षों तक यह लड़ाई होती रही। बादशाह को आशा की कोई किरण नहीं दिख रही थी। किले के भीतर घुस पाना बादशाही फौज के लिए असम्भव लग रहा था।

सइयां–बांकलिया की महत्वाकांक्षा की सूचना बादशाह के कानों तक भी जा पहुँची।

राजपूतों की कमजोरी पकड़ना खूब जानता था। वह जानता था कि सइयां बांकलियां, पताई–रावल के बाद राजा बनने का सपना देख रहा है।

बादशाह ने अपना दूत किलेदार सइयां–बाकलियां के पास भेजा– ''सचमुच तुम बहुत बहादुर हो। इतने वर्षों तक हम किले में नहीं घुस सके तो एक मात्र तुम्हारी वीरता और चतुराई के कारण। वास्तव में चांपानेर की राजगद्दी पर ऐसा ही वीर बैठना चाहिए।.... यदि तुम चाहो तो हम तुम्हारी मदद करने को तैयार हैं।''

सइयां–बांकलियां को, समय से पहले ही सपना सच होता हुआ नजर आया। उसने प्रस्ताव रखा– ''मैं गढ़ में घुसने का रास्ता बता सकता हूँ, किन्तु मेरी एक शर्त है। एक सच्चे मित्र की तरह गढ़ का सबसे ऊँचा पद मुझे दिया जाए।''

महमूद बेग को तो मुँह मांगी मुराद मिल गई। बिल्ली के भाग से छींका टूट पड़ा। बादशाह ने उसकी शर्त मान ली– ''तुम्हारे जैसे बुद्धिमान को चांपानेर का ही क्यों, पूरे गुजरात का सबसे बड़ा पद दे सकता हूँ।''

जब बांध में छोटा सा भी छेद हो जाता है तो बड़े–बड़े समुद्र को भी खाली होना पड़ता है। बादशाह की फौज ने चोर रास्ते से गढ़ में प्रवेश कर लिया। पताई–रावल ने जब घर के भेदी द्वारा लंका को ढहती देखी तो क्रोध से पागल हो गया। उसने वीरों को अंतिम सांस तक लड़ने के लिए ललकारा।

गढ़ के चौक में लकड़ियां इकट्ठी करके हवन कुण्ड बनाया गया। राजपूतनियां जौहर के लिए तैयार होने लगी। युद्ध में काम आने वाले राजपूतों की पत्नियां कुण्ड की परिक्रमा लगा कर अग्नि स्नान करने लगी।

बादशाह एक ऊंचे स्थान से हाथी पर बैठे हुए आश्चर्य से यह अनोखा दृश्य देख रहा था। सइयां–बाकलियां उनके पास घोड़े पर बैठा उन्हें बता रहा था कि अमुक–अमुक वीर मारे गए और उसकी पत्नियां ज्वाला में कूद कर जौहर कर रहीं है। बादशाह कह उठे ''धन्य हैं वे राजपूत और गजब है उनकी औरतें। इन्हें कोई नहीं जीत सकता, यदि सइयां–बांकलियां हमारे साथ नहीं होता। मैंने आज तक सब बातें सुनी ही थी, आज आंखों से देख रहा हूँ।''

गढ़ पर मेहमूद बेग का अधिकार हो गया। पताई–रावल वीर गति को प्राप्त हुए।

बादशाह ने आदेश दिया– ''सभी राजपूतों के कटे मस्तकों को एक जगह पर एकत्र किए जाएँ।''

आदेश का पालन हुआ। मस्तकों का एक छोटा पहाड़ सा बन गया।

बादशाह ने सइयां–बाकलियां को बधाई देते हुए कहा– ''हम पर तुम्हारा अहसान है। तुम्हारी वजह से ही हम पताई–रावल पर फतह पा सके। हमें अपना वचन याद है। तुमने सबसे ऊंचा पद मांगा था। सेनापति! इस मस्तकों के ढेर में सइयां–बाकलियां जी का मस्तक सबसे ऊंचा रखा जाए।''

सइयां चौका.....''मस्तक? मेरा मस्तक?'' तब तक सिपाहियों ने उसको दबोच कर हाथ बांध दिए।

बादशाह ने अट्टहास किया–''हाँ, तुम्हारा मस्तक। रहा सवाल तुम्हारी मित्रता का। जो आदमी अपने स्वार्थ के कारण अपनी बहन को विधवा बना सकता है। अपने बहनोई से विश्वासघात कर सकता है। वह अपने ही भाइयों के मस्तकों के ढेर देखकर खुश हो सकता है– वह किसी का मित्र कैसे हो सकता है?''

किंवदन्ति है कि सइयां बाकलियां का सर भुट्टे की तरह कट गया। उसके सर को मस्तकों के ढेर में सबसे ऊपर फेंक दिया गया। गिद्धों और चीलों ने सबसे पहले उसे ही अपना भोजन बनाया।

विश्वासघात करने वालों को यही फल मिलना चाहिए।

● **ब्यावर, अजमेर (राज.)**

चिड़ियाघर

डॉ. प्रवीणा अग्रवाल

गोलू भोलू राजू सुन्दर
पहुँचे चिड़ियाघर के अन्दर
करतब दिखा रहा था बन्दर
चने चबाता मस्त कलंदर
धम धम करता भालू नाचा
लम्बे से जिराफ ने झाँका
हाथी मस्त चाल दिखलाए
गैण्डा मोटी खाल हिलाए
बारी अब बन के राजा की
गरज कँपाता देह जो सबकी
मगरमच्छ से भरा था पोखर
कितना मजेदार चिड़ियाघर

● बरेली (उ.प्र.)

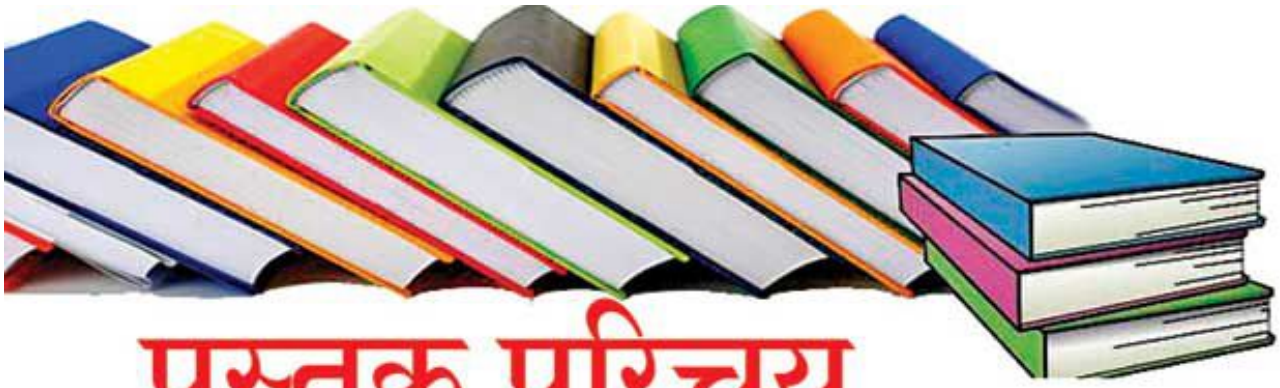

पुस्तक परिचय

सुप्रसिद्ध बाल साहित्यकार डॉ. विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद' रचित विभोर ज्ञानमाला
एल.जी. १-२ निर्मल हाइट्स मार्केट, मथुरा रोड़, आगरा (उ.प्र.)

प्रकाशित

छात्र वाणी
२२ बाल कविताएं
मूल्य ३०
पृष्ठ २४

भक्त प्रहलाद
पद्यकथा
मूल्य ३०
पृष्ठ २०

छात्र कविता
२२ बाल कविताएं
मूल्य ३०
पृष्ठ २४

बाल साहित्यकार संतोष कुमार सिंह ३ भागों में रचित भारत के महापुरुषों पर किशोर कविताएँ

पृष्ठ २०
मूल्य ४५
(प्रत्येक भाग के लिए)

प्रकाशक
साहित्य संगम प्रकाशन
मोतीकुंज एक्सटेंशन, मथुरा

सोनू की पतंग- दिनेश चन्द्र तिवारी द्वारा रचित ४७ बाल कविताओं का विविधापूर्ण

पृष्ठ ६५
मूल्य ५०
(प्रत्येक भाग के लिए)

प्रकाशक
हिन्दी परिवार
१०५, इंदिरा गांधी नगर, इन्दौर
(म.प्र.)

शब्द क्रीड़ा : भारत के चिन्ह

सही उत्तर

बाघ (पशु), मोर (पक्षी), कमल (पुष्प), बरगद (वृक्ष), तिरंगा (ध्वज), हिन्दी (भाषा), अशोक चिह्न (बोध चिह्न) रुपया (मुद्रा), सत्यमेव जयते (बोधवाक्य), नई दिल्ली (राजधानी), वन्दे मातरम् (राष्ट्रगीत), जनगणमन (राष्ट्रगान)

महान लोगों की अभिरुचियाँ

हकीमुद्दीन ए. जमीदार

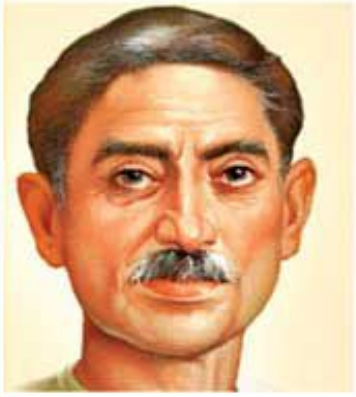

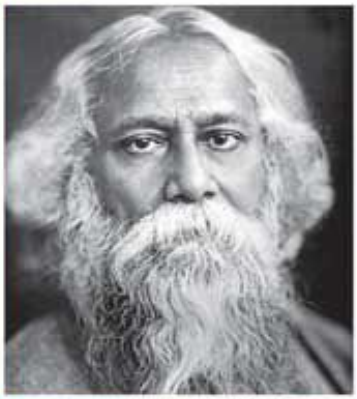

संसार में हर काम केवल धन कमाने के लिए नहीं किए जाते। कई काम ऐसे भी होते हैं जो आनन्द एवं मानसिक शांति की ओर प्रेरित करते हैं। हम इसे मनोरंजन कहें या इसमें हम कुछ समय के लिए रम जाते हैं तथा दैनिक कार्यों के बोझ को भूलकर एक नई ऊर्जा को प्राप्त करते हैं। तनाव दूर करने की पहली सीढ़ी है। लेकिन इसमें समूह की आवश्यकता पड़ती है। यानि परिवार या मित्र मण्डलों के साथ किसी रुचि के अनुसार वातावरण को बनाना पड़ता है। इस तरह विभिन्न लोग विभिन्न तरीकों से अपना मनोरंजन करते हैं।

यहाँ कुछ विश्व प्रसिद्ध व्यक्तियों के बारे में जानना मनोरंजक होगा कि वे कैसे मनोरंजन करते थे। सिकन्दर को बचपन में शेर से खेलने का शौक था। इसी शौक ने उसे साहसी सिकन्दर के रूप में पहचान दिलाई। कोलम्बस को दुनिया घूमने तथा दुनिया के देश जानने की धुन थी। इसी धुन ने उसे पूरे विश्व में एक नाविक के रूप में पहचान दिलाई। पूर्व से लेकर पश्चिम तक के देशों में जो भी सभ्यताएँ एवं संस्कृतियों की झलक देखने को मिलती है उनमें प्रायः विशिष्ट व्यक्तियों का उल्लेख हमेशा होता रहा है। क्या ईंट बनाना भी आनन्ददायक हो सकता है? जी हाँ, ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री जब भाषण देकर थक जाते थे तो ईंट बनाकर अपना मनोरंजन करते थे। रूस के क्रान्तिकारी नायक लेनिन को जब राजनैतिक कार्यों से समय मिलता था तो वे शतरंज खेलकर अपना मनोरंजन करते थे। अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को पढ़ने का बहुत शौक था। जब वे युवा थे तो एक पुस्तक उधार लेने के लिए मीलों तक सफर करने में हिचकते नहीं थे। प्रकाश के अभाव में तो वे लकड़ी जला-जलाकर या सड़क के बिजली के खम्बों के प्रकाश में पढ़ते थे। अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध नाटककार जार्ज बर्नाड शा लिखने पढ़ने से अवकाश पाकर बागवानी किया करते थे। महात्मा गांधी को मीलों तक टहलना भाता था। उपवास व अनशन से भी उन्हें शांति मिलती थी। एकान्त भी उन्हें प्रिय था। जवाहर लाल नेहरु राजनीति की उलझनों से मुक्त होते ही मनोरंजन के लिए घुड़सवारी किया करते थे। उनका विचार था कि घुड़सवारी दिल को तरोताजा बना देती है। प्रसिद्ध उद्योगपति टाटा को प्लेन उड़ाने का शौक था। इन्होनें लंदन से कराची के बीच प्लेन चलाकर एक रिकार्ड बनाया। यह खूबी रतनटाटा में भी मौजूद है उन्होंने कई बार आकाश में सेना के विमानों को उड़कार करतब दिखाए हैं।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपना मनोरंजन अभिनय तथा काव्य सर्जन कर प्राप्त करते थे। सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा ने चित्रकला को अपने मनोरंजन का साधन बनाया। बाद में वे इस कला में पारंगत हो गई। उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द ने अपनी बीमारी की असह्य पीड़ा को भूलकर मृत्यु के पूर्व अपने उपन्यास मंगलसूत्र के बीस पृष्ठ पूरे किए। तुलसी, मीरा, कबीर, सूर, आदि अनेक कवियों का काव्य सृजन स्वान्तः सुखाय था। वे कविता से धन कमाने की लालसा नहीं रखते थे। उन्हें तो आत्म संतोष प्राप्त होता था। विशेषज्ञ डॉ. सलीम अली को विश्व के दुर्लभ पक्षियों को जानने तथा वन्य जीव एवं लुप्त होते पक्षियों के प्रति बड़ा लगाव था। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय इस में दिया। क्या आप भी रखते हैं कोई अभिरुचि? उसे पहचानिए, पोषित कीजिए और जीवन में नई स्फूर्ति भर लीजिए।

● इन्दौर (म.प्र.)

कविता : कृष्ण 'शलभ'

तुम्हारे लाड़ले हम माँ

तुम्हारे लाड़ले हम माँ,
तुम्हारें गीत गाएंगें
पले हम गोद में तेरी
बड़े होकर बढ़े आगे
हो पर्वत मुश्किलों के पर
चढ़े आगे, चढ़े आगे
यह माटी है तेरी चंदन,
इसे माथे लगाएंगें
नया आकार लेगे जब
हमारी आँख के सपने
खिलेंगे फूल बनकर हम
रुपहले रंग में अपने
चहक कर प्रीत बाली
गंध के झरने बहाएंगे
हमारे रक्त में तुम हो
हमारे प्राण में तुम हो
हमारी चेतना में तुम
हमारे ध्यान में तुम
हो जिससे नाम ऊँचा,
काम वो करके दिखाएंगे
हमें बच्चा न समझे जग
'भरत' के बंशधर हम हैं
शिवा की आन, अर्जुन से
समर के धनुर्धर हम हैं
लड़ेंगे जब समर में शत्रु
के छक्के छुड़ाएंगे।

• सहारनपुर (उ.प्र.)

मायाश्री
राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार
प्रविष्टियां आमंत्रित

प्रख्यात बाल साहित्यकार डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ द्वारा स्थापित मायाश्री राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार २०१६ हेतु प्रविष्टियाँ सादर आमंत्रित हैं।

इस वर्ष यह पुरस्कार वर्ष २०१५ में प्रकाशित बाल नाटकों की मौलिक कृति पर प्रदान किया जाएगा। प्रविष्टियाँ भेजने की अंतिम तिथि ३१ मार्च २०१६ रहेगी। प्रविष्टिस्वरूप प्रकाशित पुस्तक की तीन प्रतियाँ अपेक्षित हैं। उक्त पुरस्कार हेतु पुरस्कृत कृति को ५०००/- की राशि भेंट की जाती है।

प्रविष्टि भेजने का पता
मायाश्री
राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार
सम्पादक-देवपुत्र
४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

भवालकर स्मृति कहानी
प्रतियोगिता २०१५

प्रिय बच्चो,

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देवपुत्र के पूर्व व्यवस्थापक स्व. श्री शांताराम जी भवालकर की पावन स्मृति (७ जनवरी) के अवसर पर **भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता** के लिए आपकी स्वरचित बाल कहानियाँ प्रविष्टि के रूप में आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता केवल बाल लेखकों के लिए है अतः कहानी के स्वरचित, मौलिक एवं अप्रकाशित होने के प्रमाण पत्र के साथ अपना पूरा नाम कक्षा एवं घर के पते का पिनकोड सहित स्पष्ट उल्लेख अवश्य करें।

आपकी बाल कहानी हमें ३१ मार्च २०१५ तक अवश्य प्राप्त हो जाना चाहिए। कहानी इस पते पर भेजें-

पुरस्कार

प्रथम : १५००/- ● द्वितीय : ११००/- ● तृतीय : १०००/-
५५०/- के दो प्रोत्साहन पुरस्कार

भवालकर स्मृति
कहानी प्रतियोगिता २०१५
देवपुत्र
४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)